नारीलोक विशेषांक

50 महाश्रमणोऽस्तु मंगलम्

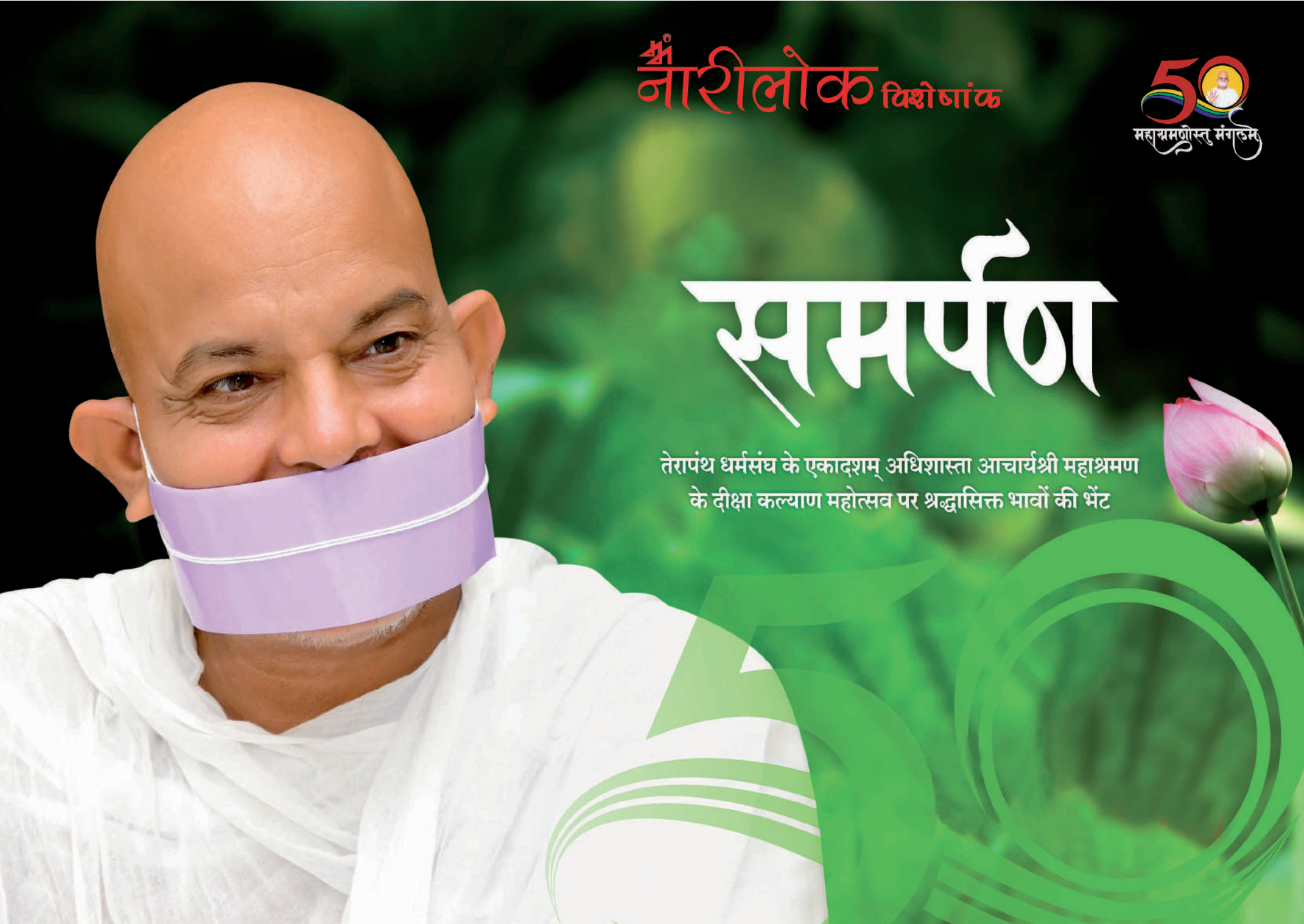

समर्पण

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण
के दीक्षा कल्याण महोत्सव पर श्रद्धासिक्त भावों की भेंट

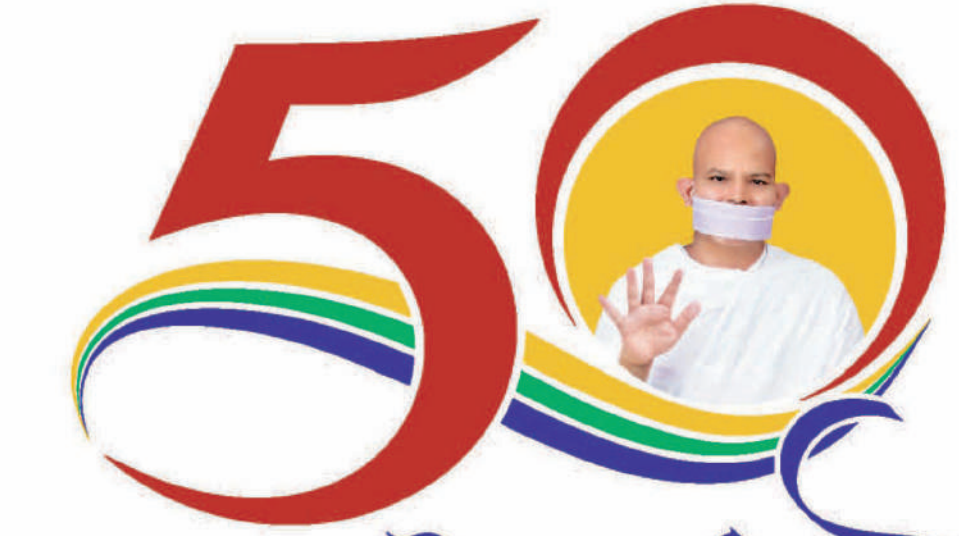

महाश्रमणोऽस्तु मंगलम्

आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव

अयि! वन्दामहे रे जिनकल्पं महाश्रमणम्।
आगमरम्यागम्यरहस्यं, वेत्तारं महाप्राज्ञम् ।
निः श्रेयसभवसुखदातारं, गतशोकं महाभागम्।।
भारतराष्ट्रे राजितरमणीयकीर्त्यात्यन्तवलक्षम्।
कलिकालेऽस्मिन् तारणतरणीं, तप एव प्रत्यक्षम् ।।

धरती अम्बर में निशदिन, गूंज रहा जिनका जयनारा,
नतमस्तक जिनके पावन चरणों में है जग सारा।
पांव-पांव चलकर जो प्रतिदिन, बांट रहा जग को उजियारा,
ज्योतिचरण, प्रभु महाश्रमण को सविनय वंदन हमारा।

स्वकथ्य

इतिहास के कुछ विशिष्ट पलों के साक्षी होने का अवसर सौभाग्यशाली व्यक्तियों को ही मिलता है। हमारा सौभाग्य है कि अपने आराध्य, आध्यात्म के सुमेरू, करुणा के सागर, जिन वाणी के भाष्यकार, तेरापंथ धर्मसंघ के देदीप्यमान नक्षत्र और जैन शासन के तेजस्वी भास्कर की दीक्षा का अमृत महोत्सव मनाने का अवसर हमारी पीढ़ी को मिला है। दीक्षा का 50 वर्ष का सुदीर्घ कालखण्ड अपने आप में एक महान परिव्राजक आचार्य के कालजयी उपलब्धियों की यात्रा है- एक तरह से यह किसी अश्वमेघ यज्ञ की विजय यात्रा की तरह है। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने लाखों व्यक्तियों के दिलों और श्रद्धा को जीता है। विश्व को अपनी संयम यात्रा से अभिभूत तो किया ही है, साथ ही एक श्रमण से महाश्रमण बनने की यात्रा भी पूरी की है। 50 वर्षों की यह गौरवमयी यात्रा है- बालक मोहन से मुनि मुदित, मुनि मुदित से महाश्रमण और महाश्रमण से महान युगप्रधान आचार्य महाश्रमण बनने की। गुरुदेव की विशिष्ट साधना ने निर्मलता और अनासक्त चेतना के शिखर का आरोहण किया है, उसे देखते हुए लगता है यह यात्रा महाश्रमण से महावीर की यात्रा बनने तक प्रवर्धमान रहेगी। आराध्य देव तीर्थंकर के प्रतिनिधि की यशस्वी अनुशासना युगों-युगों तक वर्धमान रहे, यही आकांक्षा है।

इस वर्ष अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल का अध्यक्षीय दायित्व ग्रहण करने का अवसर आपश्री की कृपा से मुझे मिला लेकिन मैं इससे भी बड़ा सौभाग्य इस बात का मानती हूँ कि आपकी दीक्षा के अमृत महोत्सव का सुअवसर इस कार्यकाल में मिला। पूरी महिला शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हुए- आपकी अभ्यर्थना और वर्धापना करते हुए मैं अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रही हूँ।
गुरूदेव! समस्त नारी शक्ति की आस्था, भक्ति, श्रद्धा और समर्पण के पुष्पों की माला आपको समर्पित कर रही हूँ।

आप जैसे महातपस्वी आचार्य की आराधना केवल शब्दों के माध्यम से नहीं हो सकती बल्कि तप का नैवेद्य भी अर्पित करना पड़ता है। इस अवसर पर हमने तप की पूरी माला पिरोई है। आपकी दीक्षा के 50 वर्षों की परिसम्पन्नता दीक्षा कल्याण महोत्सव के अवसर पर हमने जो तप के संकल्प लिए थे, मुझे बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता और गौरव की अनुभूति हो रही है कि आपकी शक्ति और नारी शक्ति की भक्ति से हमने इन लक्ष्यों से भी बहुत अधिक तप के मणकों की माला पिरोकर आज आपके श्री चरणों में प्रस्तुत कर रहे हैं। पूरी नारी शक्ति की तरफ से यही मंगलकामना करती हूँ कि आपकी दीक्षा का 100वां अमृत वर्ष भी आपके सानिध्य में मनाने का अवसर हमें मिले।

एक बार पुनः-पुनः श्री चरणों में वन्दन - अभिनन्दन!

सरिता डागा

राष्ट्रीय अध्यक्ष - अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

स्मृतियों का वातायन

जीवन पथ ज्योतिर्मय कर दो जय ज्योति चरण।
मृण्मय को तुम चिन्मय कर दो जय महाश्रमण।।

है अन्तहीन नभ-सा विशाल मानस पावन
करुणा का निर्झर बरस रहा मानो सावन
कण-कण में अमित ओज भर दो जय ज्योतिचरण।।
कर्मों का सकल बोझ हर दो जय महाश्रमण।।

चिन्तन उदार अरमान अमल पर उपकारी।
है प्रणत सुपावन चरणों में दुनिया सारी
बन सिन्धु धरा पर लहराओ जय ज्योतिचरण
जागृति के अमर गीत गाओ जय महाश्रमण।।

संयम सुरतरू की छाया में तुम देव! पले
इन्द्रिय-संयम के ढांचे में तुम सहज ढले
मन-संयम बड़ा अनुत्तर है जय ज्योतिचरण
वाणी का संयम गुरुत्तर है जय महाश्रमण।।

आहत मन झट राहत पाता दर पे आकर
सतयुग में परिणत हो जाता कलयुग-द्वापर
तुम सत्य और शिवं सुन्दर हो जय ज्योतिचरण
गणनायक धर्म-धुरंधर हो जय महाश्रमण।।

शासनमाता साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी

शुभाशंषा

परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के 50 वें दीक्षा कल्याण महोत्सव पर अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा **महाश्रमणोस्तु मंगलम्** कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

आचार्य महाश्रमण एक निर्धूम ज्योति है जिसकी रोशनी हजारों-हजारों साल तक मानव जाति को ज्योतिर्मय करती रहेगी। वे एक ऐसे अध्यात्म पुरुष हैं जिनके रोम-रोम में लोकहित की भावना प्रस्फुटित हो रही है। वे तेजस्वी प्रकाशपुंज हैं, जिस गांव से, कस्बे से, शहर से गुजरते हैं पूरे वातावरण को ज्योतिर्मय बना देते हैं।

प्रभावशाली व्यक्तित्व और कर्तृत्व के धनी, अध्यात्म के सुमेरू, अमृत पुरुष आचार्यवर की दीक्षा की अर्धसदी की संपन्नता पर 'महाश्रमणोस्तु मंगलम्' कार्यक्रम का समायोजन अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अपने गुरु के प्रति असीम आस्था और भक्ति की अभिव्यक्ति है। इससे श्रोताओं को आचार्यवर के विराट् व्यक्तित्व को समझने का अवसर मिलेगा। मंगलकामना।

– साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा

अभ्यर्थना

वीतरागकल्प आचार्यश्री महाश्रमणजी!

संयम-शिखर के 50 वें पायदान पर आरोहण का शुभदिन मुनि मुदितकुमार से युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण की आध्यात्मिक उपलब्धियों का महापर्व है।

आपके संयम-सुरतरु की शीतल छांव में आने वाले भव्य जीवों ने चारित्र-चंदन से स्वयं को सुवासित किया है, सम्यक्त्व-सुधा का पान कर स्वयं को धन्य बनाया है, सुलभ बोधि बनकर सत्यं शिवं सुन्दरं को समझने की योग्यता अर्जित की है।

आपकी अनाविल तपस्विता की सौंधी गन्ध से आप्लावित चरण-युगल जहां-जहां टिके वहां-वहां नैतिकता के गुलाब खिले हैं, सद्भावना के स्वर गूंजे हैं और व्यसन व्यथित मानव के मन ने सुकून पाया है।

आशीर्वाद का अमृत बांटते आपके ये कोमल-कर और रवि की प्रथम किरण-सी पावन मुस्कान धर्मसंघ के एक-एक सदस्य को समाधि और विशुद्धि से सम्पन्न बनाती रही है।

अनुत्तर संयम साधना की अर्धशताब्दी के उजले पलों में हम यह मंगल कामना करती हैं- अध्यात्म योगी आचार्यश्री महाश्रमणजी का ऊर्जस्वल आभावलय धर्मसंघ को युगों-युगों तक अध्यात्म का आलोक बांटता रहे।

- शासनगौरव साध्वी कल्पलता

आराधना आराध्य की

आध्यात्म का दिव्य रथ सम्पूर्ण भारत एवं नेपाल में भ्रमण करता हुआ 500 शाखाओं द्वारा
जप-तप की आध्यात्मिक भेंटों के साथ गुरू चरणों में समर्पित

21 मई 2024, जालना

महाश्रमणोस्तु मंगलम्

आचार्यश्री महाश्रमण की संयम यात्रा के

5 दशक

निर्धारित लक्ष्य

5 मासखमण

लक्ष्य प्राप्ति

6 मासखमण

तपस्वी

श्रीमती मंजू दुगड़
जलगांव

श्रीमती आशादेवी गोलछा
बालोतरा

श्रीमती कंचनदेवी छाजेड़
जलगांव

श्रीमती पिंकी तातेड़
विजयवाड़ा

श्री अनोखीलाल जैन
औरंगाबाद

श्रीमती सुनीता बड़ाला
पनवेल

निर्धारित लक्ष्य

50 अठाई

लक्ष्य प्राप्ति

60 अठाई

आचार्यश्री महाश्रमण की संयम यात्रा के

50 वर्ष

50
महाश्रमणोस्तु मंगलम्

आचार्यश्री महाश्रमण की संयम यात्रा के

600 मास

निर्धारित लक्ष्य

600 तेला एक साथ

लक्ष्य प्राप्ति

1,825 तेला

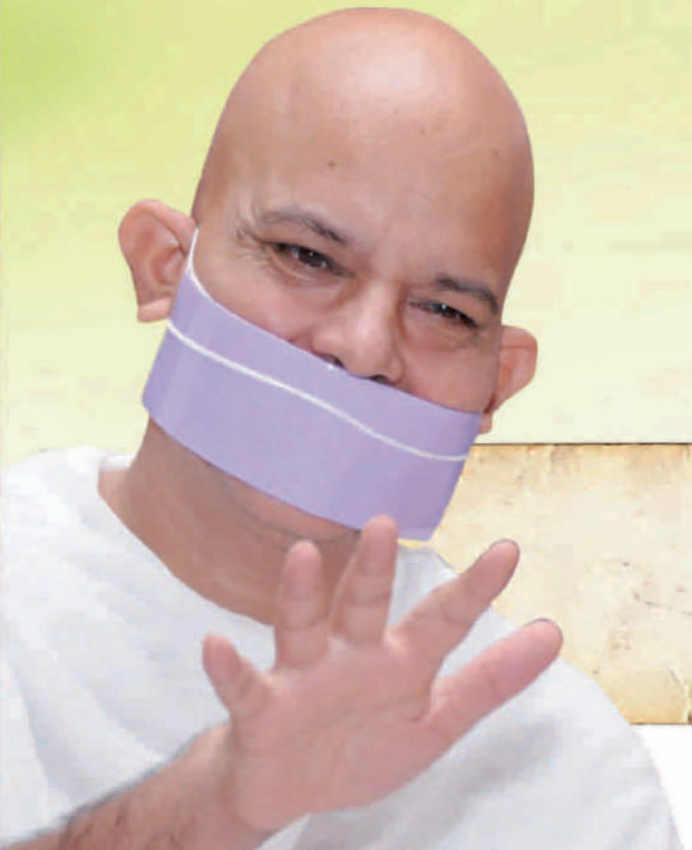

9,10,11 नवम्बर, 2023

त्याग की पावन प्रतिष्ठा, सत्य सरिता में नहा।
त्यागियों के चरण में, नत शीश मानस जन रहा।।

निर्धारित लक्ष्य

2600 उपवास एक साथ

लक्ष्य प्राप्ति

3,013 उपवास

आचार्यश्री महाश्रमण की संयम यात्रा के

2,600 सप्ताह

18 मई, 2024

तप से कर्म कटते सही, कर्म निर्जरा होती।
अनमोल है तप-साधना, जैसे सीप का मोती।।

50
महाश्रमणोस्तु मंगलम्

आचार्यश्री महाश्रमण की संयम यात्रा के

18,250 दिवस

निर्धारित लक्ष्य

18,250 एकलठाणा

लक्ष्य प्राप्ति

29,830 एकलठाणा

अक्टूबर 2023 से 22 मई 2024 तक

निर्धारित लक्ष्य

18,250 सामायिक

लक्ष्य प्राप्ति

83,528 सामायिक

18 अप्रैल 2024

आचार्यश्री महाश्रमण की संयम यात्रा के

18,250 दिवस

महाश्रमणोत्सव मंगलम्

आचार्यश्री महाश्रमण की संयम यात्रा के

4,38,000 घंटे

निर्धारित लक्ष्य

4,38,000 माला

लक्ष्य प्राप्ति

4,39,311 माला

26 अप्रैल 2024

सुयोगो योगो रे।
माधवमासे रे! सरदारशहरे, सत्तमदूगड़वंशे।
जा तिर्जाता रे! भैक्षवयतिपते! झूमरगृहे हर्षे।।
माधवमासे रे! सरदारशहरे, गृहीता त्वया दीक्षा।
मन्त्रीमुनिना रे! दत्ता सुशिक्षा, पूर्णा कृता वीक्षा।।
माधवमासे रे! सरदारशहरे, द्विसहस्रदशाब्दे।
संघाधीशा रे! जाता भवन्तो गांधीविद्यास्थले।।

उत्सव - संयम साधना का

महाश्रमणोस्तु मंगलम्

LOGO एवं गीत का विमोचन

महाश्रमणोस्तु मंगलम् कार्यक्रम के प्रसार हेतु मंडल ने एक लोगो का निर्माण करवाया तो एक सुमधुर गीत भी इस हेतु तैयार करवाया गया। परम प्रसन्नता की अनुभूति है कि लोगो का अनावरण परमपूज्य आचार्यप्रवर की सन्निधि में हुआ और गीत का पटाक्षेप महाश्रमणोस्तु मंगलम के वृहद् आंचलिक कार्यक्रम कोलकाता से हुआ। इस गीत की रचना साध्वीश्री मुदितयशाजी ने की एवं स्वर सुप्रसिद्ध संगायिका मीनाक्षी भूतोड़िया ने दिया।

तेरापंथ का परचम फहरा दो

दुनिया को रोशन जो करे,
'महाश्रमण' उनका नाम है, नाम है।
भक्तों के संकट जो हरे,
'महाश्रमण' तीरथ धाम है, धाम है।
फहरा दो-फहरा दो, तेरापंथ का परचम फहरा दो
जिन शासन की सौरभ को गुरुवर, धरती और गगन तक पहुंचा दो।

तेज संयम का अनूठा भाल चम-चम करता है
ओज वाणी का विलक्षण सबके मन को हरता है
सिद्धियां तुम पर निछावर प्राण-अर्पण करती हैं
नेह से भीगी नजर हर मन की पीड़ा हरती
फहरा दो-फहरा दो, तेरापंथ का परचम फहरा दो
जिन शासन की सौरभ को गुरुवर, धरती और गगन तक पहुंचा दो।

पांच दशकों का सफर संकल्प-श्रम की गाथा है
बांटते सबको उजाला द्वार जो भी आता है
ज्ञान की गंगा तुम्हारे चरण निश दिन धोती है
साधना से दीप्तिमय जीवन अलौकिक ज्योति
फहरा दो-फहरा दो, तेरापंथ का परचम फहरा दो
जिन शासन की सौरभ को गुरुवर, धरती और गगन तक पहुंचा दो।

कीर्तिधर की कीर्तिगाथा सुनके गौरव होता है
नमन है आध्यात्म के जो बीज हरदम बोता है
चेतना की लौ जला उद्धार करते जन-जन का
दे रहे सबको सहारा देव तेरा चरणन्
फहरा दो-फहरा दो, तेरापंथ का परचम फहरा दो
जिन शासन की सौरभ को गुरुवर, धरती और गगन तक पहुंचा दो।

महाश्रमणोस्तु मंगलम्

कार्यक्रम का आयोजन

पूज्य प्रवर के दीक्षा पर्याय के पांच दशकों की पूर्णता के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा देशभर में छः चरणों में अभिवन्दना एवं अभ्यर्थना के भव्य कार्यक्रम आयोजित किये गए। भक्ति एवं श्रद्धा के अनुकरणीय रचनात्मक कार्यक्रमों में 5000 से भी अधिक लोग प्रतिभागी बने एवं पूरे देश में महाश्रमणोस्तु मंगलम् के स्वर गुंजायमान हुए। देश के विभिन्न अंचलों में कार्यक्रमों की प्रस्तुति ने पूरे वातावरण को महाश्रमणमय बना दिया।

कोलकाता-अहमदाबाद-भीलवाड़ा,
गुवाहाटी-जयपुर
जालना

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल
श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ महिला मंडल, गुवाहाटी

WISDOM WEDNESDAY

इस उपक्रम के अंतर्गत प्रतिमाह दो बार राष्ट्रीय स्तर पर आचार्यश्री महाश्रमण की तीन पुस्तकों पर आधारित ऑनलाईन क्विज का आयोजन किया जाता है। हजारों की संख्या में उत्साह से बहनें इस क्विज में भाग ले चुकी हैं।

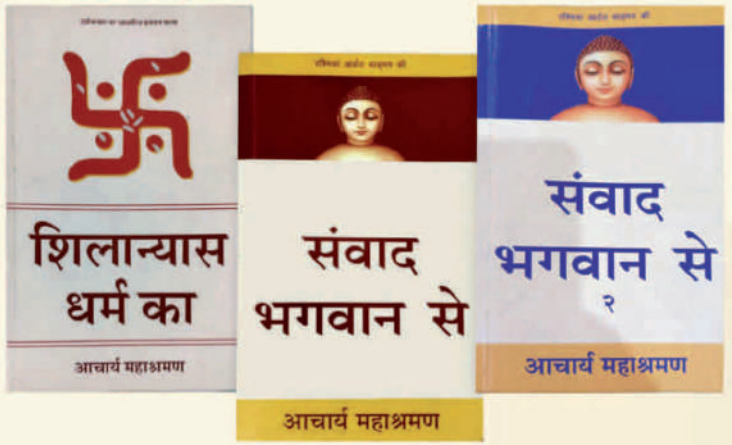

बढ़ते कदम विकास की ओर

विद्यालय संरक्षण

इस उपक्रम के अंतर्गत देश भर में सरकारी कन्या विद्यालयों को व्यवस्थाओं की दृष्टि से संरक्षण प्रदान किया जा रहा है। जैसे शुद्ध पीने का पानी उपलब्ध करवाने हेतु आर.ओ.प्यूरीफायर लगाना, स्कूलों में स्पोर्ट्स व म्यूजिक के उपकरण उपलब्ध कराना, फर्नीचर एवं ब्लैक बोर्ड जैसी जरूरी चीजें उपलब्ध कराना आदि।

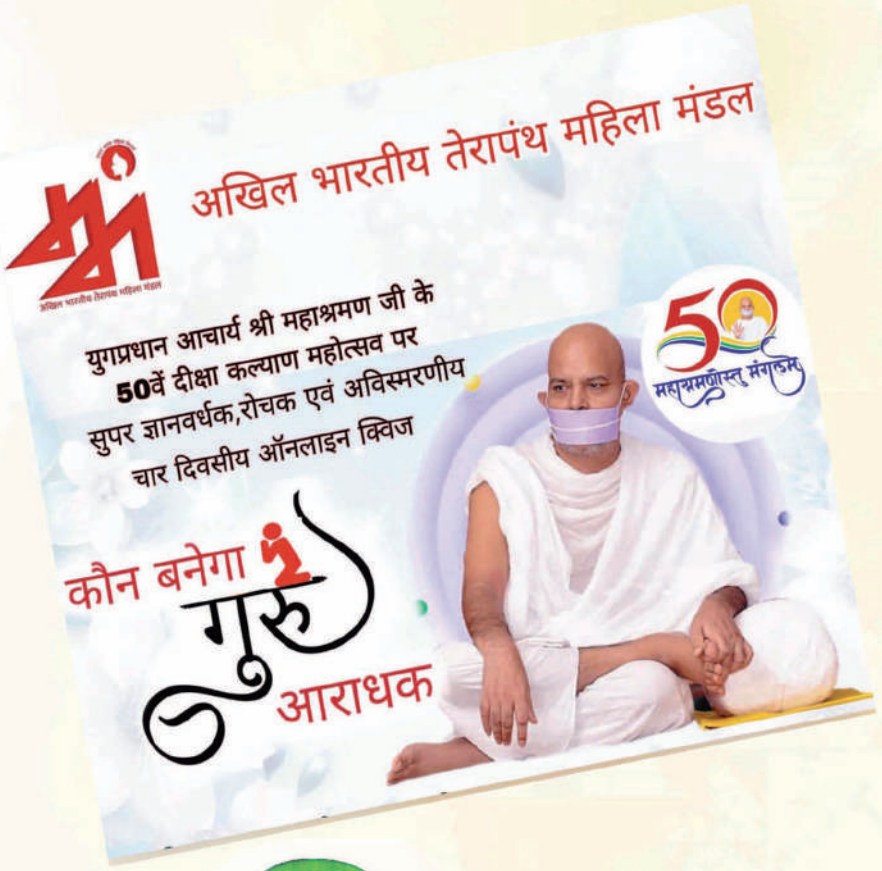

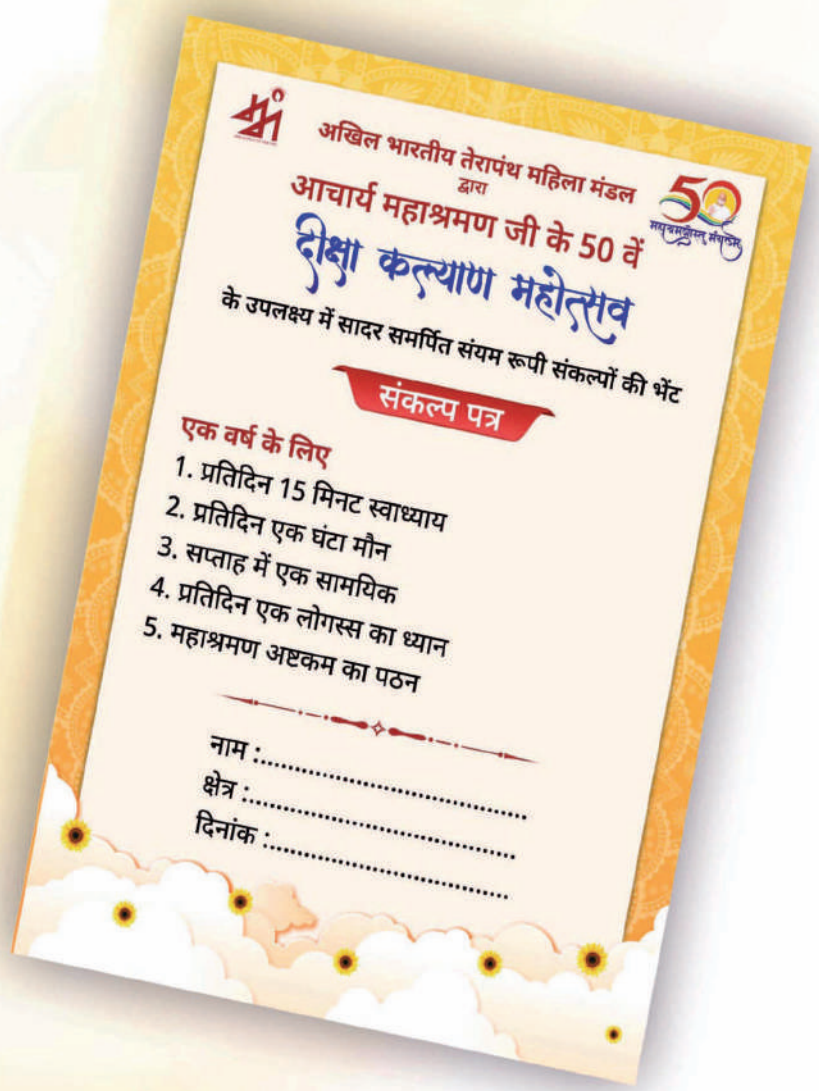

तत्वसंबोध

पूज्य आचार्य प्रवर की भावना रहती है कि हमारा श्रावक श्राविका समाज तत्वज्ञान से पारंगत हो। हमारी बहनें **विज्ञ** बनें, **तत्वज्ञ** बनें। **तेरापंथ प्रचेता** बनें, आगम की **व्याख्याता** बनें। इस उद्देश्य से अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की शाखा मंडलों द्वारा देश भर में स्थानीय स्तर पर तत्व प्रशिक्षण की कार्यशालाएं संचालित की जा रही हैं जिससे अनेकों श्रावक श्राविकाएं लाभान्वित हो रहे हैं।

आचार्य महाश्रमणजी के दीक्षा कल्याण महोत्सव के अवसर पर उपरोक्त संकल्प स्वीकार किये गये, तत्पश्चात् तेरापन्थ समाज द्वारा प्रसारित संकल्प स्वीकार किये गये।

आचार्यश्री महाश्रमणजी के 50वें दीक्षा कल्याण महोत्सव पर गुरुवर अभ्यर्थना में अभातेममं के निर्देशानुसार कन्या मंडल की सहभागिता

श्रद्धेय आचार्य प्रवर द्वारा कन्या मंडल के कार्यों की प्रदर्शनी का अवलोकन

श्रद्धा की अनुपम श्रृंखला–	क्षेत्र	सहभागी कन्याएं
* महाश्रमण अष्टकम् कंठस्थ	139	1297
* चौबीसी आराधना	51	391
* ध्येयपथ (महाश्रमण से महावीर)	38	200 से अधिक
* एकलठाणा व्रत	113	1087
* 6 जमीकंद के त्याग (1 से 11 दिन तक)	97	927
* जप अनुष्ठान	139	2000 से अधिक
* गुरुदेव जीवनवृत्त– हस्तकला परिदर्शन	47	705
* पोस्टर मेकिंग कंपीटिशन	50	178
* 18 पाप– असतो मा सद्गमय	97	600 से अधिक

समर्पण
मन के भावों का

तुलसी महाप्रज्ञ की अनुपम कृति –

महाश्रमण

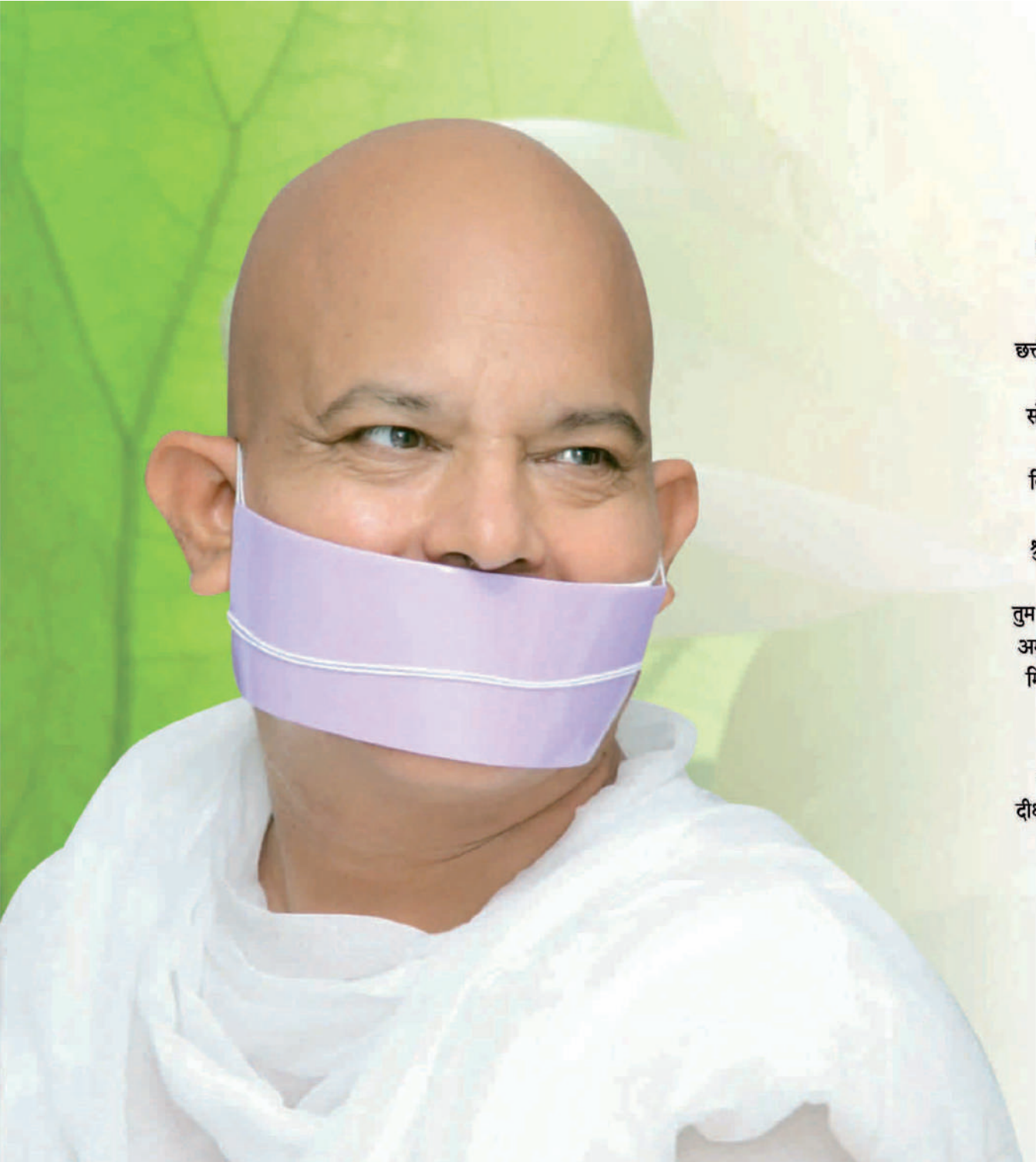

विश्व विभूति प्रखर प्रतापी, तीर्थंकर सम गुरुवर पाए
तपः साधना अद्भुत तेरी, महातपस्वी कहलाए।।

छत्तीस गुणों के अतिशय धारी, लाखों के हो तुम उपचारी,
तेजस्वी आभामंडल से महक रही है गण फुलवारी
संकल्प शक्ति की ले मशाल, आगे तुमने चरण बढ़ाए।।

विनय समर्पण अनुपम तेरा, महाप्रज्ञ के हो तुम पट्टधर
अष्ट सम्पदा के धारक हो, बने संघ के ज्योतिर्धर
श्रुत की धारा बहे निरन्तर, अन्तर की प्रज्ञा जग जाए।।

तुम करुणा के महासमन्दर, पल-पल मिलती शीतल छाया,
अमृतमय वाणी को सुनकर, जन-जन का मानस हरसाया,
मिली शासना अनुपम तेरी, गण का गौरव सदा बढ़ाएं।।

अनुपमेय व्यक्तित्व तुम्हारा, धर्मसंघ के हो सम्राट
ज्योतिर्मय है जीवन तेरा, सूरज सम व्यक्तित्व विराट
दीक्षा की यह स्वर्ण जयन्ती, खुशियों के हम दीप जलाएं।।

सरिता डागा, जयपुर
राष्ट्रीय अध्यक्ष - अभातेममं

अमरता नापते चरण ये!
शुभ स्वप्न के शतदल बुन रहे।
लघु पदों से नाप सागर,
स्वर्णिम इतिहास के क्षण चुन रहे।।

स्मित मृदुगात, आभामय वदन,
कमललोचन से करुणा निर्झर झर रहे।
सुधांशु सी शीतलता, प्रभाकर सी प्रभास्वरता,
द्वंदमय विश्व में निर्द्वंद बन विचर रहे।।

हे मोहन! मुदित! महाश्रमण!
पतित-पावन बन जन-जन की पीर हर रहे।
संयम की स्वर्णमयी बेला में,
ज्योतिर्धर, महासूर्य को श्रद्धा अभिवंदन कर रहे।।

पुष्पा बैंगानी, दिल्ली
प्रधान न्यासी - अभातेममं

चेतना के स्पंदनों में, स्मरणीय जो रम्य है,
जगतवंध्य श्रमण, श्री महाश्रमण प्रणम्य है।

योग सिद्ध, लोक महर्षि, कालजयी व्यक्तित्व है,
निरपेक्ष, निस्पृह, निष्काम सा कृर्तत्व है।
गम्य होके देह से, प्राणों में अगम्य है,
जगतवंध्य श्रमण, श्री महाश्रमण प्रणम्य है।

श्लाघा, निंदा से परे हर सांस में बस साम्य है,
असीम पौरुष में सदा, वीतरागता काम्य है।
युग मनीषा के लिए, प्रमाद अक्षम्य है।
जगतवंध्य श्रमण, श्री महाश्रमण प्रणम्य है।

दूरदृष्टा, निर्बंध सृष्टा, के कर में अपनी डोर है,
वे विधाता है ना उनका ओर न कोई छोर है।
अखंड यायावर का दीप्तिमान शौर्य अदम्य है,
जगतवंध्य श्रमण, श्री महाश्रमण प्रणम्य है।

दीक्षा कल्याणक शुभ क्षण उतरा, सौभाग्य ले अपने अंगना,
ज्योतिचरण के इन्द्रधनुषी, रंग सा दूजा कोई रंग ना,
अम्बर से अवनि तक श्रव्य, शांतिदूत का माहात्म्य है,
जगतवंध्य श्रमण, श्री महाश्रमण प्रणम्य है।

नीतू ओस्तवाल, भीलवाड़ा
महामंत्री - अभातेममं

हे महाश्रमण!
दीक्षा दिवस पर एक वरदान चाहिए।
अंतर यात्रा में रमण करूं मैं,
मुझे वही वरदान चाहिए।

प्रभु तुलसी ने सत्व दिया जो,
उसी तत्व से उसी सत्व से,
अंतर अनुसंधान चाहिए।
निज से निज पहचान चाहिए,
यही एक वरदान चाहिए।

महाप्रज्ञ से! ज्ञान मिला सद्ध्यान मिला जो,
उसी ज्ञान से उसी ध्यान से,
जीवन ज्योतिर्मान चाहिए,
समता रस का पान चाहिए,
यही एक वरदान चाहिए।

'दीक्षा दिवस' पावन शुभ दिन,
मंगलमय, अभिनन्दन वंदन
सहज मिले गुरु चरणों में नित
अमृतमय अनुपात चाहिए।
मुझको ऐसा वरदान चाहिए।
मंगल आशीर्वाद चाहिए।।

तारा सुराना, कोलकाता
संरक्षिका - अभातेममं

गुरुवर तुमको मेरा प्रणाम
दिव्य गुणों के धारक गुरुवर
जिन शासन की अतुलित शान
दीक्षा कल्याण महोत्सव पर, मेरा शत-शत तुम्हें प्रणाम।

अद्भुत योगी अनुपम ध्यानी
छत्तीस गुणों के निधान हो तुम
क्या गाऊं तव गौरव गाथा
कलयुग में भगवान हो तुम।

दीक्षा कल्याण महोत्सव पर
हम सबका श्रद्धा भरा नमन
महातपस्वी महाश्रमण के
श्री चरणों में मेरा शत-शत वंदन।

सुशीला पटावरी, दिल्ली
संरक्षिका - अभातेममं

आज धरा में क्यों पुलकन है,
क्यों नभ में नूतन उच्छवास।
दीप जले क्यों आज मांगलिक,
उदित हुई क्यों उजली भोर,
दीक्षा दिवस की अर्धशती पर
खुशियाँ छाई है चहुँ ओर।

तेरापंथ सम्राट आपको,
नाप सके सामर्थ्य कहाँ है
महाश्रमण पदचिन्ह जहाँ पर
लगता चारो धाम यहाँ है।
देव चिरायु रहो धरा पर,
सरदारशहर में लिया अवतार
शुभ संस्कार भरे आप में
सम्मानित दूगड़ परिवार
बचपन से ही आपका
निश्चल सरल व्यवहार
संघ-संघपति के प्रति
श्रद्धा अपरम्पार।

कर दमन मन इन्द्रियों का,
गुरु से पाया आपने गौरवमय सम्मान
दीक्षा कल्याण महोत्सव पर
श्रद्धानत मण्डल परिवार।।

शांता पुगलिया, मुम्बई
संरक्षिका - अभातेममं

दीक्षा कल्याण महोत्सव प्रभु का है, महाश्रमण वरदानी है
आलोकित करती अखिल विश्व को, यह महाश्रमण पुनवानी है
महाश्रमण की कृपा से शासन में शिखर चढ़े, घोर तपस्वी और कवि
महाश्रमण के तेज से, लाखों दिलों में चमक उठा रवि।

दसों दिशाओं में अणुव्रत, जन जागृति की पुकार बने
धर्म की अलख जगाने को, हर दिन महाश्रमण के दरबार बने
भरतक्षेत्र की भूमि पर, महाश्रमण की अमृतवाणी है
महाप्रज्ञ तू इसकी रक्षा कर, यह भैक्षव शासन अवदानी है।

प्रेक्षा ध्यान जीवन विज्ञान के, महाश्रमण शासक है
वे तुलसी तेज उपासक है, तेजस्वी है अविनाशक है
इन के चरणों को वन्दन करने, उठ गयी निगाहें लाखों में
टकटकी लगा कर इनकी छवि को देखा, विद्वानों की आँखों में।

मुख्यमुनि व साध्वीवर्या, धर्म संघ की गौरवशाली निशानी है
साध्वी प्रमुखा व शासनमाता की, दुनिया में अजब कहानी है
महाप्रज्ञ तू इसकी रक्षा कर, यह भैक्षव शासन अवदानी है।

प्रकाश देवी तातेड़, मुम्बई
संरक्षिका - अभातेममं

अनुशासन के शिखर पुरुष तुम, जन-जीवन के सिरजनहार
पांच दशक अनुत्तर संयम के, अभिनंदन है सौ-सौ बार।

तेरे चरण जहां पर पड़ते, तमस धरा का धोते,
नैतिकता के उजले मोती, पग-पग पर तुम बोते,
आगम वाणी अवगाहन से, दीपित नया उजाला,
प्यास स्वयं नीर बन जाती, जब पाते दर्श तुम्हारा।
श्रद्धा, आस्था और समर्पण, दिशी-दिशी पसरे रंग हजार,
पांच दशक अनुत्तर संयम के, अभिनंदन है सौ-सौ बार।

पाकर स्मित मुस्कान तुम्हारी, हृदय हिलोरे खाता,
अनुकंपित जो नजर टिके, लोहा पारस हो जाता,
गुरु के घट से अनुग्रह की, बूंद छलक जब जाती,
धारा बनकर, अंतस धोकर, पाप बहा ले जाती।
ऋतम्भरा प्रज्ञा के धनी तुम, अनुकंपा की उजली धार
पांच दशक अनुत्तर संयम के, अभिनंदन है सौ-सौ बार।

सायर बैंगानी, दिल्ली
संरक्षिका - अभातेममं

जो श्रेय है, आदेय है, जो प्राण है जो त्राण है,
जो साधना के क्षेत्र की, सबसे बड़ी पहचान है।
जो सुख प्रदाता, सुमति दाता, पाप भक्तों के हरे,
जो प्रिय लगे सबको सदा, कल्याण जो सबका करे।
जो शान्त नीति निपुण, परम वैशिष्ट्य से परिपूर्ण है,
ऐसे हमारे गुरु सच की, शक्ति से सम्पूर्ण है।
जिनके प्रखर वक्तव्य में, वैराग्य ही की बात है,
स्थितप्रज्ञता, समता जहाँ पर, दिखती साक्षात है।
ध्रुव योग छाया की तरह, चलता सतत अविराम है,
वो संघ का सरताज सचमुच, सहज है निष्काम है।
हे महाश्रमण! हे आर्यवर! तू नव सुखद श्रृंगार है।
हे युगप्रधान, हे युग पुरुष! तू संघ का सरताज है,
हे प्रभास्वर! हे देवधर! ऐसा हमें वरदान दो,
पावन बनूं तेरी तरह, उस पंथ का प्रस्थान दो।

कनक बरमेचा, सूरत
ट्रस्टी - अभातेममं

हे युगदृष्टा ! हे युगसृष्टा !
हे युगनायक! हे गणनायक !
आप सूरज से ज्योतिर्मय, और चंदा सम शीतलता।
धीर, वीर, गंभीर मुदित रहते प्रमुदित हैं,
आपकी दिव्य प्रकाश से गुरुवर
सकल दिशाएं महाश्रमण श्रम से सिंचित हैं
अमृत के हो तुम अजस्र स्रोत।
जिस साधना और तपस्या का ये फल है
अमर रहे यह निर्मल वाणी
हम सब यही भावना भाते हैं।
चरणों की रज नित्य मिले
बस यही कामना करते हैं।

ज्योति जैन, कोलकाता
ट्रस्टी - अभातेममं

दिव्य दिवाकर देव तुल्य
संयम रथ पर हुवे सवार
तेरापंथ अधिनायक गुरुवर
अभिवन्दन करते शत बार।।

हे ज्योति पुंज तुम ज्ञान कुंज
कृपा सिंधु, जग तारणहार
युग दृष्टा, युगसृष्टा गणिवर
अभिवन्दन करते शत बार।।

स्वर्णिम क्षण, दीक्षा कल्याण,
ज्योति चरण की जय जयकार
महाश्रमण की जय हो जग में
अभिवन्दन करते शत बार।।

डॉ. सूरज बरड़िया, कोलकाता
ट्रस्टी - अभातेममं

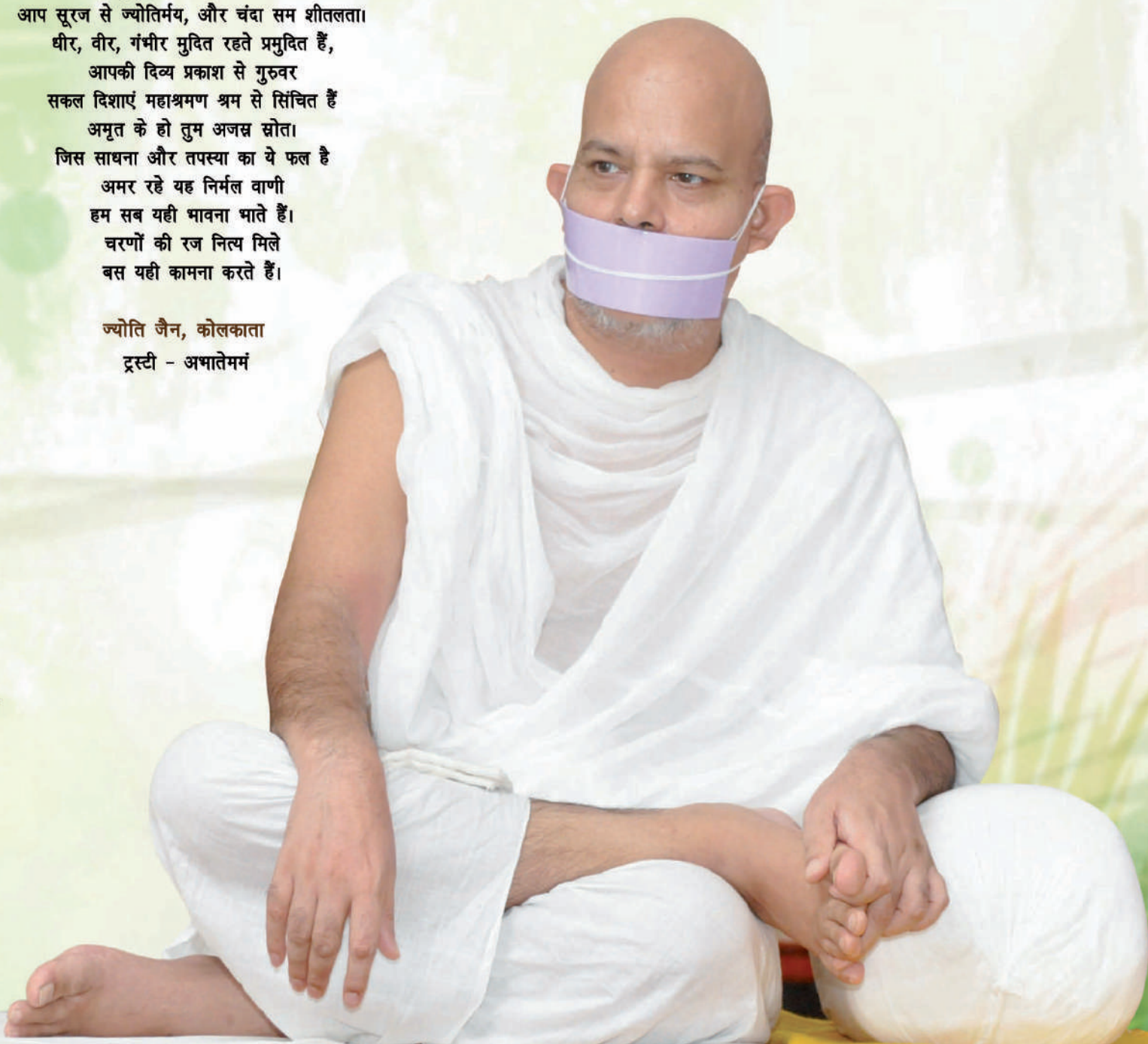

स्वर्ण जयंती दीक्षा की, सुन्दर बेला मन को भाई
महाश्रमण के दिव्य भाल पर, कुंकुंम चन्दन सी आभा छाई।

एकादशम शास्ता की देखो, चहुँ ओर है आज पुरवाई,
निखरे तेरी ओजस्विता चहुँदिस, जग सारा हो तेरा अनुयायी।

नभ में चमका ध्रुव तारा सम, संयम पथ पर मर्म समझकर
ज्योत जलाकर संयम रत्नों की, अलख जगाई पल-पल जगकर।

असंख्य भवि प्राणी को तुमने, राह दिखाई जिनवाणी की
त्याग-तपस्या को शीश चढ़ाकर, विश्व गुरु की पहचान बनाई।

नव इतिहास तुमने है सजाया, हर मन को जाकर समझाया
आगम को घर-घर पहुँचाया, जिन वाणी का सार बताया।

शांत सुधारस स्नेह सरसता, करुणा का निर्झर स्रोत है बहता
तेरापंथ का सुखद सलोना, स्वर्ण अक्षरों को हर पल गढ़ता।

हो अमिट तेरी परछाई, दुनिया में जैनत्व की साख बढ़ाई।
बनो शतायु! रहो चिरायु! हेम की श्रद्धा तुझमें समाई।

बिमला दुगड़, जयपुर
ट्रस्टी - अभातेममं

मौन मूक विचार से
समय के प्रवाह से
सूर्य सा ओज लिए
माटी सा संतोष लिए
गुरुवर महाश्रमण हमारे
धरती पर भगवान बिराजे।

जीवन तुम्हारा आध्यात्मिक यात्रा
जनमानस को मार्ग दिखाता
नित्य नए कीर्तिमान रचते तुम
संघ भाल पर दीप्त सूर्य तुम
पचासवें दीक्षा दिवस पर
स्वीकारो शत् शत् वंदन तुम।

कल्पना बैद, कोलकाता
ट्रस्टी - अभातेममं

महातपस्वी महाश्रमण की, गौरव गाथा गायें हम।
गुरुदेव के दर्शन पाकर, मन उमंग हरसाये हम।।

भाग्य हमारे प्रबल संघ के, अनुपम संघशास्ता पाएं।
नये-नये अवदानों से, जग को नूतन राह दिखाएं ।।

संयम के सुरतरु पर, महका कल्पवृक्ष महान है।
आज अद्वितीय इस अवसर पर, हम करते गुरु का गुणगान है।।

लता गोयल, कोलकाता
परामर्शक - अभातेममं

ग्यारह वर्षों की आयु में, वैराग्य हुआ उत्पन्न
घर-परिवार को छोड़कर, की तुलसी से दीक्षा ग्रहण
विश्व गुरु को वंदन।

सूरज की तरह तपकर, बने महाप्रज्ञ के पट्टधर
अहिंसा की ज्योति लेकर, घूम रहे पग-पग चलकर
विश्व गुरु को वंदन।

जीने की कला निराली, गजब आपका प्रबन्धन
बदल देता है दूषित भावों को, एक आपका प्रवचन
विश्व गुरु को वंदन।

पचास वर्ष पूर्ण हुए संयम के, महातपस्वी सम जीवन
कर रही इस पावन अवसर पर, सुमन श्रद्धा अर्पण
विश्व गुरु को वंदन।

सुमन नाहटा, दिल्ली
उपाध्यक्ष - अभातेममं

हे तेरापंथ के महासूर्य, हे नेमा के नंदन
अभिनंदन करते, करते हैं शत शत वंदन।

हे संघ के महाशिखर, हे महाप्राण, आगम उद्‌गाता
झरती अमृत धार जिस मुख, मुखमंडल घणा सुहाता।

संयम के पचास वर्ष में, गण को खूब महकाया
तन को, मन को, खूप तपाकर, कुंदन इन्हें बनाया।

चमका नाम जगत में ऐसा, ज्यों चमके नभ में ध्रुव तारा
रश्मियां नाचे चहुं दिशा में, ज्यों तट तोड़ चले जल धारा।

आँखों से ओझल नहीं होती, छवि आपकी नयनाभिराम
हे ज्योति पुंज, हे महासंत, हे महाश्रमण, तुम्हें प्रणाम।
हे ज्ञान ज्योति, तुम्हें प्रणाम।

विजयलक्ष्मी भूरा, जयपुर
उपाध्यक्ष – अभातेममं

दीक्षा के पचासवें वर्ष पर श्रद्धानत हो करती हूँ अभिवंदना,
परमाराध्य गुरु महाश्रमण के श्री चरणों में अभ्यर्थना।

सूरज, चाँद, सितारे कर रहे ऐसे महापुरुष की वर्धापना,
ऐसे गुरुवर का वरद्‌हस्त रहे सदा यही है प्रार्थना।

श्रद्धा से सराबोर होकर गुरु इंगित की सदैव आराधना,
गुरुदेव आप स्वस्थ रहें, निरामय रहें, कृपा करवाते रहें अमृतदेशना।

निधि सेखानी, सूरत
सहमंत्री – अभातेममं

विनय और विवेक की है जो समन्विति,
श्रद्धा और समर्पण की है जो संस्कृति,
विनय और पुरुषार्थ की है जो सम्यक् युति,
बीज से वटवृक्ष की है जो परिणति,
अनुशासन और ऋजुता की है जो जीवंत युति,
ऐसे महातपस्वी महामनस्वी को है श्रद्धा प्रणति...

डॉ. वंदना बरड़िया, काठमांडू
सहमंत्री – अभातेममं

In reverence to a saint of grace,
Fifty years adorned in monkhood's embrace.
Disciplined, in virtue's light,
Guiding souls through the darkest night.

With sympathy, a boundless sea,
He soothes the weary, sets hearts free.
Non-violent in word and deed,
His path is peace, his creed, to heed.

Careful steps upon the earth,
Each footprint bears a sacred worth.
Traversing lands on feet so true,
His message clear, Mahavira's view.

Exceptional deeds in humble guise,
Beneath the vast and starlit skies.
A beacon bright, a guiding hand,
In service to the divine command.

CA Taruna Bohra, Mumbai
Treasurer - ABTMM

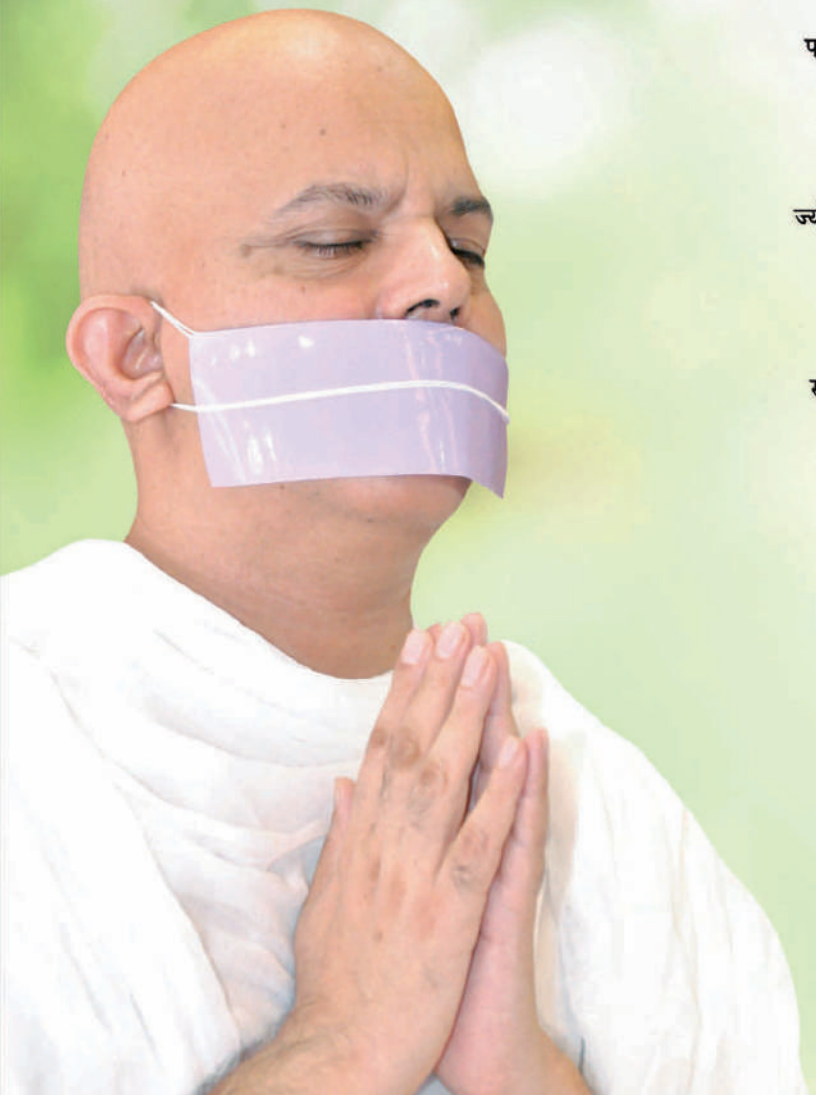

महातपस्वी, महाश्रमण, महामानव गुरुराज।
परम यशस्वी, परम पुरुष, राष्ट्रसंत सरताज।।

पावन-पावन मुख मुद्रा सबसे निराली,
नैनों से बरसे करुणा की धार
प्यारे गुरुवर हैं जीवन के आधार।।

ज्योति चरणों में सविनय मस्तक झुकाएँ,
गुरु चरणों में है शांति अपार
गुरुवर दिखलाएं मुक्ति का द्वार।।

सद्ज्ञानी महाश्रमण की शरण लें हम,
सद्ज्ञान शरण से होगा उद्धार
प्यारे गुरुवर हैं जीवन के आधार।।

रमन पटावरी, कोलकाता
संगठन मंत्री - अभातेममं

हे! भाग्यविधाता
जीवन के निर्माता, शक्ति प्रदाता, भाग्य विधाता
पूरा समाज गा रहा, तेरे श्रम की जीवन गाथा
अमृतमय ऊर्जा पाकर,
मंगलमय मंगल पाठ सुनकर,
सरसमय व सरल बन जाता जीवन का सफर,
अनन्त अभिवंदना ऐसे महाश्रमण को
आपसे मिलता रहे हमें युगों-युगों तक प्रकाश
स्वीकारो वंदन अभिनंदन
हे नेमा नन्दन।।
महाज्ञानी महाश्रमण को शत् शत् नमन
ज्योतिचरण की ऊर्जा से
ज्योतिर्मय बनकर सृजन
अहिंसा यात्रा से पा रहे संदेश जन-जन
हे मानव मसीहा,
परिवर्तन के पावन धाम
करूं शत्-शत् प्रणाम - करूं शत्-शत् प्रणाम

सरिता बरलोटा, रायपुर
प्रचार-प्रसार मंत्री - अभातेममं

आचार्य श्री महाश्रमणजी
एक आस है... हमें पूर्णता की ओर ले जाने का
एक विश्वास है... हमें लक्षित मंजिल तक पहुँचाने का
एक उच्छवास है... उलझे विचारों को सुलझाने का
एक सुवास है... हमें पवित्रता से महकाने का
एक आभास है... हमें निर्भरता की ओर बढ़ाने का

ऐसे विरले महान संत के संयम पर्याय के पाँच दशक पूर्णता पर
दीक्षा कल्याण महोत्सव पर अपनी भावांजलि अर्पित करते हुए
अपने आराध्य की अभ्यर्थना करती हूँ।

नीलम सेठिया, सेलम
निवर्तमान अध्यक्ष – अभातेममं

हे कल्याणमय चरण!
अरुणआभा चमक लिए,
सत्यशक्ति आधार लिए,
अनुकम्पा वरदान लिए,
मानवमन कल्याण लिए,
गतिमान दिव्यचरण
सहस्त्रोंबार नमन!!

हे ज्योतिर्धर।
प्रज्ञा दीप जलाने को,
नई पौध सींचन को,
भावी संतति दिशाबोध को,
संस्कृति की संवाहिका को,
गतिमान ज्योतिर्धर
वंदन अभिनन्दन हर क्षण।।

अदिति सेखानी, अहमदाबाद
कन्या मंडल प्रभारी-अभातेममं

सोये मन को राह मिली,
थके मन को चाह मिली।
भाग्य सिकन्दर का तेज
तिरने को गुरु महाश्रमण की नाव मिली।।

ओ अखिल विश्व के बेमिसाल ज्योति तुम्हें नमन,
आगम निगम की विमल विश्रान्ति तुम्हें नमन,
चिंतन महापर्व के निर्मल मोती तुम्हें नमन।

धरती अम्बर गूँज उठे,
गुरुवर के जयनादों से
प्रणाम गुरुदेव मैं करती हूँ,
श्रद्धा के अनगिनत हाथों से।।

सोनम बागरेचा, कोलकाता
कन्या मंडल सहप्रभारी-अभातेममं

साधना की अमिट ज्योति पा, तोड़ रहे तमस का घेरा
उस साधना के उन्नत शिखर को, श्रद्धासिक्त नमन मेरा।।

मुनि सुमेर कर कमलों से, अनमोल संयम रत्न अपनाया
तुलसी विश्व विद्यालय में, आत्म ज्ञान प्रशिक्षण पाया
रहो भीतर जीओ बाहर, सूत्र जीवन में विकसाया
महाप्रज्ञ प्रयोगशाला में, आत्मपरीक्षण खूब कराया
महावीर वाणी से जिसने, वीतराग सा रूप उकेरा।।

नेपाल धरा पर भूकंप का जब, सहसा संकट गहराया
क्रांति की मशाल थामे, साहस का नवदीप जलाया
वैश्विक महामारी कोविड का, चिहुं दिशि में जब भय छाया
चरैवेति चरैवेति को, निज जीवन का अंग बनाया
इक्कीसवीं सदी का भिक्षु बन जिसने, रच दिया नूतन सवेरा।।

तीन देश बाइस राज्यों की, यात्रा का इतिहास रचाया
जन-जन के हृदयांगण में, नैतिकता का प्रकाश फैलाया
नशामुक्ति सद्भावना का, घर-घर में संदेश पहुँचाया
अणुव्रत प्रेक्षाध्यान सुमन से, जिनशासन उपवन महकाया
दीक्षा कल्याण महोत्सव पर जिसने, साधना का आलोक बिखेरा।।

कुमुद कच्छारा, मुम्बई
रा. का. सदस्य - अभातेममं

महाश्रमण हे महातपस्वी
हे सत्यनिष्ठ, आचारनिष्ठ, हे संघनिष्ठ, हे लक्ष्यनिष्ठ,
संघ शिरोमणि, संघ सितारे तुम हो संघ के प्राण विशिष्ट।

पंचाचारी, विघ्नहरणहारी आभामंडल है तेजस्वी,
अध्यात्म जगत के महासुमेरू महाश्रमण हे महातपस्वी।

उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, गुण हैं एक से एक बढ़कर,
शक्ति, पराक्रम शौर्य की महिमा गाएं हम मिलजुल कर।

महाप्रज्ञ सी अंतर्मुखता, तुलसी का प्रतिरूप हो तुम,
जन-जन के मानस में छाए, मानवता के स्तूप हो तुम।

कोड़ दिवाली राज करो तुम, दीर्घायु की करें कामना,
दीक्षा कल्याण महोत्सव पर अमृत पुरुष को अभिवंदना।।

पुष्पा बैद, जयपुर
रा. का. सदस्य - अभातेममं

महातपस्वी, महायशस्वी
महामनस्वी, महाश्रमण
हे! ज्योतिचरण हे! महाश्रमण
तव चरणों में करुं नमन।।

उग्रविहारी, समता धारी
महा उपकारी, कर्मवीर
समत्व साधक, ज्ञानाराधक
क्षमा श्रमण, इस युग के महावीर।।

जन-जन के तारक, गुरु आराधक
सिद्धत्व साधक, संघ प्रभावक
करुणा के सागर, दिव्य दिवाकर
अतिशयधारी, विश्व प्रभावक।।

भाग्य सराहूं, गाऊं तव गुणगान
बड़े भाग से मिले गुरु महान।।

मधु देरासरिया, सूरत
रा. का. सदस्य - अभातेममं

हे महायोगी, महामनस्वी, गुरु महाप्रज्ञ के पट्टधर।
लाल लाडले नेमा माँ के, झूमर कुल के उजियार।।

विनय की अलख जगाकर, पाया महातपस्वी अलंकरण।
श्रम के बन पर्याय बने तुम, गणनायक महाश्रमण।।

काठमाण्डू का भीषण भूकम्प, चाहे कोविड रोग भयंकर।
हर स्थिति में ज्योति पुंज के, चरण रहे गतिमान निरंतर।।

हिंसा से संत्रस्त विश्व में, तुम शांतिदूत बन आये।
तेरे शीतल आभावलय में, जुड़े नित अध्याय नये।।

अर्चना के पुण्य क्षणों में, शुभ भावों का अर्घ्य चढ़ाएं।
एकादशमाधिशास्ता को, वर्धापित कर हरषाएं।।

दीक्षा कल्याणोत्सव पर, सकल समाज बधाएं।
गुरु महाश्रमण का, श्रद्धा से तिलक लगाएं, मंगल गाएं।।

मंजू भूतोड़िया, दिल्ली
रा. का. सदस्य - अभातेममं

महातपस्वी महाश्रमण गुरुवर, हैं गण उपवन के श्रृंगार।
मैक्षव शासन नंदनवन सा, पा तुम्हें हुआ यह गुलजार।।

दुगड़ कुल दीपक माँ नेमा, तात झूमर के सौभागी तुम लाल,
वैशाख मास अति उत्तम, पाया सबने तुमसा रतन अनमोल।
जन्म लिया पाई दीक्षा जहाँ बने आचार्य, धन्य धरा वह शहर सरदार।।

मुनि सुमेर लाडनूं दीक्षा दाता, पाए गुरु तुलसी से भाग्य विधाता,
तुलसी कृति तुम अनुकृति तुलसी की, महाप्रज्ञ पट्टधर विख्यात।
अनुशासना तुलसी सी अरु साधना महाप्रज्ञ सी सदा मुखर।।

ऋषि परम्परा के संवाहक, आगमवाणी के संगायक विभुवर,
सम, शम, श्रम त्रिवेणी संगम, पापभीरु इंद्रिय संयम तव अनुत्तर।
अमृत महोत्सव गुरुवर का श्रद्धानत सब,
रहें निरामय बने चिरंजीवी, हैं सबके मंगल उद्गार।।

जयश्री जोगड़, इचलकरणजी
रा. का. सदस्य - अभातेममं

महाश्रमण का नाम मंगलकारी है, महा सूर्य समान।
असंख्य गुणो की खान है, महासागर समान।।

जन-जन के संकट मोचक है, चिंतामणि समान।
बिन मांगे मिल जाता है, सब कल्पवृक्ष समान।।

मंत्राक्षर है, आपका नाम राम समान।
है देव ऋषि आप करवाते प्रेक्षाध्यान।।

रोज सिखाते जीवन विज्ञान।
प्यासा भी हो जाता निहाल, आप सरोवर समान।।

माला कातरेला, चैन्नई
रा. का. सदस्य - अभातेममं

आभामंडल है आकर्षक, मुख पर मुस्कान आठोंयाम।
तेरापंथ के हर श्रावक के, भगवन् तुम हो चारों धाम।।

मुनि मुदित से गुरू महाश्रमण, वर्ष पचास संयम अनमोल।
कृतियाँ गढ़ते चलो तुम, जन-जन के मुख पर ये बोल।।

स्वस्थ बने समाज बढ़े, अहिंसा, सद्भावना, नैतिकता।
है सतरंगी सोच, जीवन जनता को समर्पित रहता।।

युवामनीषी शांतिदूत, हे युगप्रधान नेमानंदन।
हम सौभागी, पाएं तेरी दिव्य शरण, हे ज्योति चरण।।

अर्पित करती तव चरणों में, श्रद्धा का अभिनव चंदन,
स्वीकारो शत-शत वंदन, हे! श्रमणों में महाश्रमण।।

सीमा बैद, गुलाबबाग
रा. का. सदस्य - अभातेममं

निर्गुण चदरिया ओढ़े संत मुदित, पाया महाश्रमण अभिधान।
गुरु द्वय ने परखा था जिसको, गंगाणे में मिला संघ को वरदान।।

कुशल प्रशासक अनुशासक आर्यवर, साहित्यसृजक तुम महापरिव्राजक।
पापभीरू, तपः साधक, गुरुवर क्या गुणगान करूं, तुम हो आत्मानुशासक।।

शांतिदूत संत शिरोमणि से अलंकृत, तेरापंथ के तुम उजले भास्कर।
युग कर रहा स्वयं अभ्यर्थना तुम्हारी, हो शतायु युग प्रधान आर्यवर।।

अर्चना भंडारी, नोएडा
रा.का. सदस्य- अभातेममं

जिस धरा पर पड़ते तेरे पावन चरण,
वह माटी बन जाती है चंदन।
जयघोषों से गुंजित धरती गगन,
जय ज्योति चरण जय महाश्रमण।।

महावीर के प्रतिनिधि, वर्तमान युग के भिक्षु
हे दिव्य पुरुष हे ज्योतिपुंज।
वीतराग अवतारी तुम भगवन,
तेरापंथ की यशस्वी आचार्य परंपरा के सक्षम पटधर।।
करकमलों में कोटिशः नमन

त्याग एवं संयम के अर्धशतक पूर्ति का महोत्सव आया अति पावन,
देख देख हम भाग्य सराहे, है भिक्षु शासन नंदन वन।
युगों युगों तक राज करो तुम, हे शिखर पुरुष संघप्रहरी बन,
दीक्षा कल्याण की शुभ बेला पर, स्वीकारो वंदन अभिवंदन।।
हे महाश्रमण हे महाश्रमण।

दीपा पारख, चैन्नई
रा.का.सदस्य - अभातेममं

स्वर्णिम बेला, स्वर्णिम अवसर,
स्वर्णिम दीक्षा महोत्सव आया।
महाश्रमण सा गणमाली पा,
सकल संघ है हरसाया।

सहज शांति की मूरत हो तुम,
तुमने गण बगिया को सरसाया।
कुशल शासना की छाया में,
कली कली को विकसाया।

वंदन तुलसी, महाप्रज्ञ को,
जिसने तुम्हें निखारा।
मोहन, मुदित, महाश्रमण बन,
सबका भाग्य संवारा।

दीक्षा कल्याण महोत्सव पर,
वर्धापित कर रहा जग सारा।
अध्यात्म जगत के महासूर्य को,
अभिवंदन है आज हमारा।

प्रभा घोड़ावत, इंदौर
रा. का. सदस्य - अभातेममं

युग के तुम उजले नक्षत्र, मोहन, मुदित ओ महाश्रमण
नेमानंदन हे विश्व विजेता, ज्योतिर्धर, कीर्तिधर हे शांतिधर
ज्योतिपुंज धवलकुंज हे आलोकपुंज
संयम पर्याय के पचास बसंत पूर्ण हो रहे सरताज
स्वीकारो सहस्त्रों अभिवंदना के स्वर आज...
धरा के हो तुम अमिट विश्वास
हे त्रिलोकीनाथ! तुम आस्था की अद्भुत आस,
हो अविचल मन के तुम आर्य, तव अमृत वचनों के हम दास
सुरभित चंदन ज्यूं अमृत निर्झर का नित रसपान दिराते,
नैतिकता के सौरभ से नित मंजिल मुखरित हो करवाते।
संयम के हे महासुमेरु तव चरणों में मिटे भव-भव के क्रंदन
नित मिलती रहे तव सन्निधि, झेलो शत-शत वंदन, ओ मम हृदय के स्पंदन।।

निर्मला चण्डालिया, मुम्बई
रा. का. सदस्य - अभातेममं

नमन कर पावन चरण में, भावभीनी वंदना।
दीप ज्योतिर्मय जले, रोशन करे अनुशासना।।
दीर्घ संयम समर्पण, त्याग तप की मीनार हो।
पुरुषार्थ की ऊर्जा अनंत, गुरु शक्ति का संचार हो।।
अनुशासना की छांव में, आत्मनुशासन सीख ले,
युगों-युगों तक करो शासना, नित आर्शीवर हमको मिले।।

रंजू लूणिया, शिलोंग
रा.का.सदस्य - अभातेममं

करुणा की निर्झर धारा
जिन नयनों से बहती है,
स्नेहिल मुख पर मृदु मुस्कान
जिनका परिचय कहती है।
गुरु की आभा, उजली अनुपम
श्रद्धा से सर झुक जाए,
ऐसे महाश्रमण की मधुरिम
मूरत मन में रहती है।।

ममता रांका, गंगाशहर
रा. का. सदस्य - अभातेममं

हे युगपुरुष। हे महापुरुष। शत्-शत् प्रणाम,
हे सिद्ध पुरुष। श्री महाश्रमण जन-जीवन मनहारे।
झूमरमल के वीर सपूत, दुगड़ कुल के उजियारे,
अहिंसा यात्रा के प्रणेता, अप्रमत्त है क्षण-क्षण।

धन्य हुई धरा सरदारशहर की, जन्में तुम जहाँ,
आचार्य तुलसी की आज्ञा पाकर दीक्षित हुए तुम जहाँ।
लाडनूं में मिला महाश्रमण पद, हे दिव्य दिवाकर।
गंगाशहर में मिला युवाचार्य पद, दर्शन से हर्षित मन।

हे तेरापंथ के महासूर्य, पा आचार्य पद रचा नव इतिहास,
भिक्षु-तुलसी-महाप्रज्ञ शासन की तुमने गरिमा बढ़ाई,
ध्यान-साधना-तप से हर पल, अंतर की शक्ति जगाई।
मानवता की मशाल जलाकर, गाँव-गाँव चल बने प्रभु नारायण।।

हर्षित मन से मना रहे दीक्षा महोत्सव आज तुम्हारा...

अनुपमा नाहटा, कोलकाता
रा. का. सदस्य - अभातेममं

दीक्षा कल्याण महोत्सव पर वंदन बारंबार,
महाश्रमण के श्री चरणों में अभिनंदन बार हजार।
रहे सदा गतिमान चरण, ये दो आशीर्वर नेमानंदन,
वंदन करती पूज्यचरण में, आस्था का अभिनव चंदन।।

अहिंसा यात्रा, अणुव्रत से युग धारा में भर रहे प्राण,
नशा मुक्ति, सद्भावना, नैतिकता से हो राष्ट्र का नव निर्माण।
अध्यात्म जगत के दिव्य दिवाकर से खिलता रहे गण उपवन,
वन्दन करती पूज्य चरण में, आस्था का अभिनव चंदन।।

तेरापंथ संघ की गरिमा, गुरुवर तुमने शिखर चढ़ाई,
अभिनव है अनुदान तुम्हारे, चिंतन में हर क्षण तरुणाई।
युगों युगों तक हे! ज्योतिचरण, करो तुम संघ संचालन,
वन्दन करती पूज्यचरण में, आस्था का अभिनव चंदन।।

इन्द्रा लुणिया, कटक
रा. का. सदस्य - अभातेममं

विद्या के ज्योति, ज्ञान की अविचल धारा
गुरुदेव की वाणी, है आत्मा का प्रकाश

श्रावकों का मार्गदर्शन, चेतना का नव संचार
गुरु महाश्रमण जी की शिक्षा, है जीवन का उड़ान

अहिंसा का संदेश, अनुशासन का पाठ
गुरुदेव के पास, है हर समस्या का समाधान

दीर्घायु, चिरायु रहो गुरुदेव, गूँज रहा धरती पर नारा
दीक्षा कल्याण महोत्सव पर, प्रभुवर को नमन हमारा

महातपस्वी, महायशस्वी स्वीकारो हम सबकी अभिवंदना।

नीतू बैद, अहमदाबाद
रा. का. सदस्य - अभातेममं

संघ चमन के कुशल बागवां। गण की कली-कली विकसाएं।
पा इंगित आदेश तुम्हारा, नव युग की नव लिखें ऋचाएं।
गुरु वशिष्ट सम दिव्य पुरुष तुम, दिव्य ज्ञान का दो उपहार।
गण-गगनांगण गगन-मणि तुम, चमको गण में वर्ष हजार।
गण के चाँद सितारे 'दीक्षोत्सव' पर वंदन करते शत-शत बार।।

विनीता बेगानी, पाली
रा. का. सदस्य - अभातेममं

सरस्वती के वरदपुत्र, अभिवंदन करते महाश्रमण
माँ नेमां के लाल दुलारे, झूमर कुल उजियारे महाश्रमण
ओजस्वी आभा से मुखरित, मुखमंडल है महाश्रमण
तप, त्याग और तेजस्विता की, अनुपम कृति है महाश्रमण
विद्या, विनय, विवेक की, प्रतिमूर्ति है महाश्रमण
निर्मल प्रज्ञा के धनी, ब्रह्म योगी है महाश्रमण
सूरज सम दैदीप्य भाल, अलौकिक ज्ञानी महाश्रमण
कार्य कुशलता, नम्रता, साधना के शिखर पुरुष है महाश्रमण
दीक्षा की अर्धसदी पर गूंजे, दीपो जय-जय महाश्रमण
जन-जन की आस्था के धाम, पूज्यता के पूज्य है महाश्रमण।।

मनीषा बोथरा, इस्लामपुर
रा. का. सदस्य - अभातेममं

आज अमल अभिनंदन के पल, वंदन करते बार हजार।
प्रज्ञा के हे महापुंज तुम, अखिल विश्व के तारणहार।
अभिनंदन करते बार हजार।।

धरती के इस महासूर्य को, वर्धापित करते हर्ष अपार।
हिंसा से संतप्त धरा पर, बहती करुणा रस की धार।
नशामुक्ति अभियान चलाकर, नैतिकता का नाद बजाकर।
जन-जन को लाभान्वित करने, खुले सदा तुम्हारे द्वार।।
अभिनंदन करते बार हजार।।

अहिंसा के अवधूत बने तुम, शांति के महास्तूप लिए तुम।
गांधी की सी कार्यशैली है, गांधी का प्रतिरूप लिए तुम।
हिंदू हो या सिख इसाई, सांप्रदायिक सद्भाव बढ़ाया।
वत्सलता के हो महाश्रोत, अहिंसा मैत्री के सक्षम सूत्रधार।।
अभिनंदन करते बार हजार।।

परिमंडित है गण उपवन ये, खूब सजे हैं वंदनवार।
स्वर्णिम स्वस्तिक रचे द्वार पर, खुशियां अनहद पारावार।
क्या बतलाएं क्या-क्या हो तुम, सरस्वती के वरद पुत्र हो।
दीक्षा दिवस की स्वर्ण जयंती पर, अर्पित भावों का उपहार।।
अभिनंदन करते बार हजार।।

उषा सिसोदिया, भीलवाड़ा
रा. का. सदस्य - अभातेममं

तेरापंथ उपवन में सुन्दर, सुमन सुनहले आज खिले है।
प्रबल भाग्य के कारण हमको, महाश्रमण गुरुराज मिले हैं।।

तेरापंथ का अनुपम तारा, माँ नेमां का लाल दुलारा।
जन-जन का जो नमन सितारा, पुलकित है जन जीवन सारा।।
वलय ऐसा दिव्य मुख पर, सूर्य जैसा तेज खिले।
अन्तर्दिल की यही भावना, लाख वर्ष तक राज चले।।
प्रबल भाग्य के कारण हमको, महाश्रमण गुरुराज मिले हैं।।

शासन बहुत देखे हमने पर, गुरुवर सा कोई राज कहाँ है।
वीर बहुत देखे हमने पर, गुरुवर सा जांबाज कहाँ है।।
अनुशासन का ढंग निराला, बिन आज्ञा ना पात हिले है।
जन्म सभी ने लिया धरती पर, पर गुरुवर सा लाल कहाँ है।।
प्रबल भाग्य के कारण हमको, महाश्रमण गुरुराज मिले हैं।।

संगीता बाफना, कोलकाता
रा. का. सदस्य - अभातेममं

हे दिव्य दिवाकर ज्योतिपुंज, मेरे महाश्रमण भगवान।
आपके दीक्षा कल्याण पर करती, मैं कोटि-कोटि नमन।।

जिनकी सम संयम की सौरभ से, सुरभित है तेरापंथ महान।
गगनांगण का मन प्रांगण है, जिनशासन का प्राण।।

जिनवाणी को जन-जन तक पहुँचाते मेरे करुणा निधान भगवान।
मर्यादाओं का सृजन करते, लगते हो पुरुषोत्तम राम।।

जहाँ-जहाँ चरण पड़ते, सुसंस्कारों का होता निर्माण।
अहिंसा यात्रा आध्यात्म के द्वारा भरते सबमें जान।।

दीक्षा कल्याण पर हे मेरे आध्यात्म गुरु,
श्रद्धा से अर्पण मेरा तेरे चरणों में भाव भरा प्रणाम।।

प्रीति घोसल, दिल्ली
रा. का. सदस्य - अभातेममं

आध्यात्मिक चिन्मय चिराग, जन-जन को सौहार्द का पाठ पढ़ाता।
धीर गंभीर अनुशासित गण नायक, मानवता को सहिष्णुता का पथ दिखलाता।।

नेमा नन्दन लाल, भिक्षु तपोवन में नवनीत गुलाब खिलाता।
आगम ज्ञाता जीवन निर्माता, जन मानस को संयम का बोधपाठ कराता।।

तुलसी महाप्रज्ञ का ज्योतिपुंज, मानवीय मूल्यपरक शिक्षा की राह दिखाता।
संत शिरोमणी अणुव्रत अनुशास्ता, व्यसन मुक्ति का प्रकाशपुंज दिखलाता।।

पुरुषार्थ का मंत्रदाता, देव, गुरु और धर्म का सन्मार्ग दिखाता।
मर्यादित तेरापंथ धर्मसंघ का सम्राट, क्षमा और मैत्री का दीप प्रज्वलित कराता।।

भव सागर का तारणहार, सेवा और समर्पण का संस्कार जगाता।
करुणानिधि महातपस्वी युगप्रधान, सत्य अहिंसा का रसपान कराता।।

निर्मला छाजेड़, जलगांव
रा. का. सदस्य - अभातेममं

युगनायक युगपुरुष तुम्हें वंदन है।
युगप्रधान ज्योतिर्धर अभिवंदन है।।

जय जय ज्योतिचरण उतरे हैं धरा धाम बन महाश्रमण।
ज्ञान मयूरी पंख पसारे हृदयधाम हैं समवसरण।
नादयोग! ऊर्जा-आलय ! वंदन हैं।।

कंचन काया में अधिवासित शाश्वत ज्योतिर्मय सन्यास।
नर में नारायण संभावित सच कर दिखलाया विन्यास।
भगवत्ता अधिरूप! भूप! वंदन हैं।।

करे कामना संघ-संपदा बढ़े निरामय हो सरताज।
वर्धापन मंगल बेला में उत्सवमय हर दिशि है आज।
शिवसुख सम्मुख प्राण प्रणत वंदन है।।

अलका बैद, छापर
रा. का. सदस्य - अभातेममं

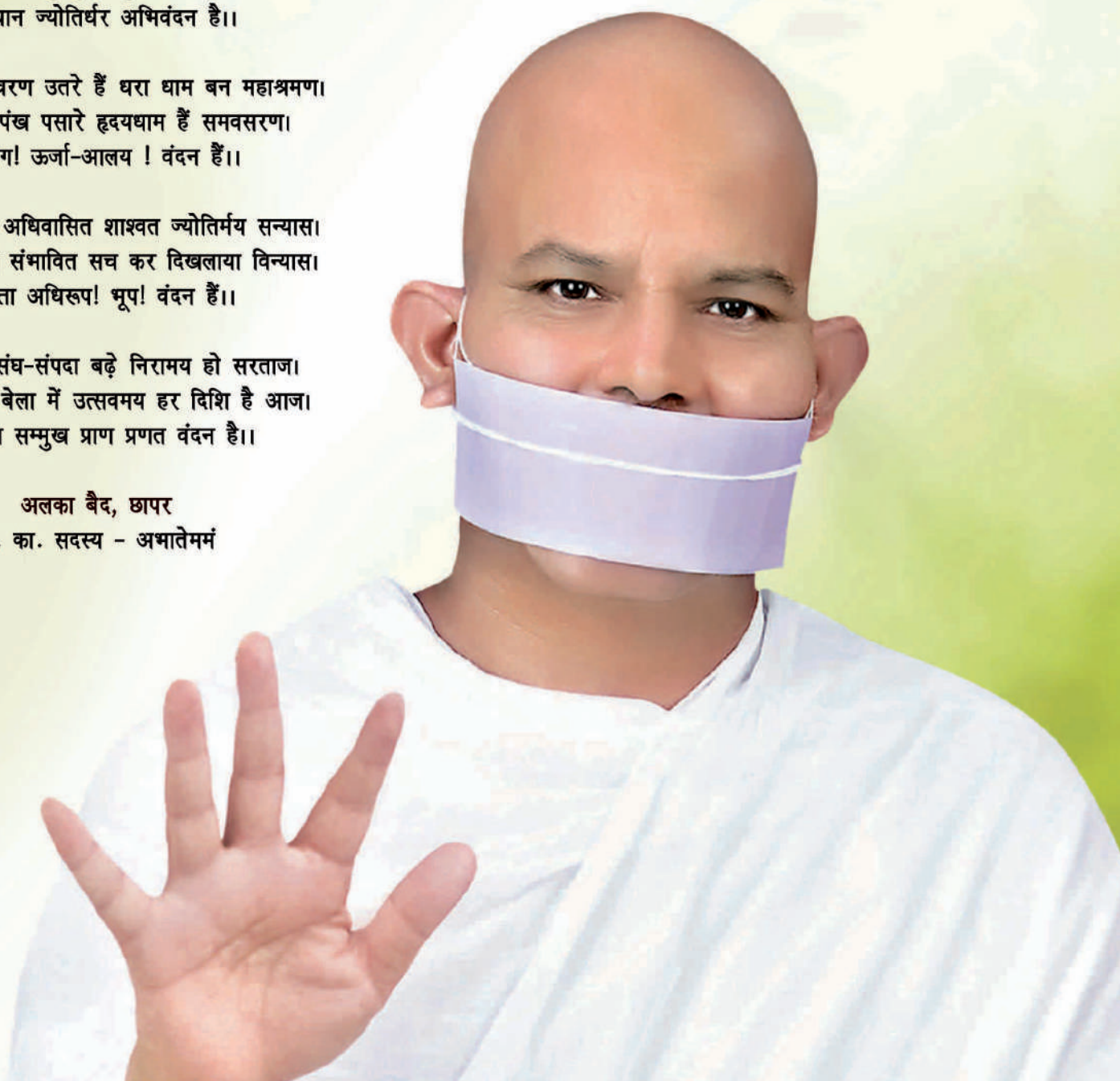

प्रबल पुण्य के भाग्योदय से, हमने ऐसे गुरुवर पाएं।
दीक्षा के कल्याण महोत्सव पर, अभिनन्दन कर हरसाये

युगों-युगों तक मिले शासना, ऐसा प्रभुवर उपहार दो ।
सफल फले पुरुषार्थ सभी के, ऐसा अनुपम वरदान दो

श्रेया बाफना, उधना
रा. का. सदस्य - अभातेममं

हे युगप्रधान, हे युगपुरुष, हे शांतिदूत महाश्रमण भगवान

विचारों का प्रवाह, शांति का स्रोत है पास जिनके,
मन की शुद्धता, आत्मा की उच्चता है पास जिनके,
ज्ञान की किरणें, प्रेम का सागर है सन्निधि में जिनके,
वे हैं गुरु सबके जीवन उद्धारक महाश्रमण भगवान,
हे युगप्रधान, हे युगपुरुष, हे शांतिदूत महाश्रमण भगवान

श्रेष्ठ है उनका आचार, अहिंसा सत्य की राहों पे चलते,
है तेरापंथ का पुण्योदय, ऐसे कल्पवृक्ष हैं फलते,
मानवता की हो मिसाल तुम, जैन धर्म की तुम पहचान,
हे युगप्रधान, हे युगपुरुष, हे शांतिदूत महाश्रमण भगवान

राखी बैद, सूरत
रा. का. सदस्य - अभातेममं

श्रद्धा पुष्प, आस्था-अक्षत, समर्पण से
ज्ञान, दर्शन चारित्र, तप के प्रखर सूर्य को वंदन।

दृष्टि से सृष्टि सरसाए तेरी प्रज्ञा का शीतल चंदन,
शशि के ऊर्जस्वल आभा से अभिमंडित पूज्यवरम एकादशम
दसों आचार्यों की सकल गुणों का होता जिनमें दर्शन
रोशन प्रखर चेतना तेरी, करुणा का बहता सरस्वान्

महातपस्वी, प्रबल मनोबल, उत्कृष्ट चिंतन, निस्पृह अद्भुत संघ समर्पण
अविरल दीर्घ अहिंसा यात्रा अहिंसक चिंतन का हुआ जन-जन जागरण
तेरापंथ के कोहिनूर, अध्यात्मजगत के मुकुटमणी को करते वंदन
दीक्षा कल्याण दिवस के शुभ अवसर लो हमारा श्रद्धासिक्त अभिवंदन।।

नीरू पुगलिया, जयपुर
रा. का. सदस्य - अभातेममं

हे दिव्य दिवाकर दिव्य कीर्तिधर, तेरी करुणा अपरम्पार।
दीक्षा का कल्याण महोत्सव, अभिनंदन करते बारम्बार।।

सूर्य कांति सा तेज निराला, शीतल शशिधर सी मुस्कान।
धरणी की सी धैर्य धीरता, करुणा अम्बर अनंत पहचान।।
तेरा आशीर्वर मिल जाए, हो जाता है बेड़ा पार।
दीक्षा का कल्याण महोत्सव, अभिनंदन करते बारम्बार।।

कर्तृत्व तुम्हारा सम्मोहन सा, यश कीर्ति की गाथा गाए,
तेरे अनगिनत उपकारों से, संघ नीलगगन को छू जाए,
युगों युगों तक करो शासना, श्रद्धा आस्था लो उपहार,
दीक्षा का कल्याण महोत्सव अभिनंदन करते बारम्बार।।

बड़भागी हम सौभागी हैं, अवसर अनुपम आज मिला है,
सच पूछो तो मन वीणा को, स्वर लहरी का साज मिला है,
कालजयी इतिहास रचो तुम, नव अवदानों का संसार,
दीक्षा का कल्याण महोत्सव, अभिनंदन करते बारम्बार।।

अनिता बरड़िया, तिरूपुर
रा. का. सदस्य - अभातेममं

अतुल्य करुणा, अतुल्य श्रम, अतुल्य मेरे गुरु की मृदु मुस्कान।
अतुल्य है विद्या, विनय और विवेक का संगम।
गुरुद्वय के आशीर्वर से आप सदा आगे बढ़ते रहे।
श्रद्धा और समर्पण भाव से नित नये कीर्तिमान रचते रहे।

हुई प्रलंब अहिंसा यात्रा, राजकीय सम्मान पाये।
नशा-मुक्ति, सद्भावना व नैतिकता के बिगुल बजाए।
'मंत्रीमुनि' और 'शासनमाता' का संघ को दिया उपहार।
'मुख्यमुनि' और 'साध्वीवर्या' का नव-चिंतन किया साकार।

जैनम् जयतु शासनम्, सांवत्सरिक एकता के सूत्रधार।
शनिवारीय सामायिक, सुमंगल साधना का मिला उपहार।
दिग् दिगंत फैले रश्मियां तुम्हारी, झूमर-नेमा के लाल।
दीक्षा कल्याण महोत्सव पर हम, करते वंदन-अभिनंदन बारंबार।।

नीलिमा बैद, जयपुर
रा. का. सदस्य - अभातेममं

महाश्रमण प्रभु गुरुवर मेरे, जिनके गुणों का न पारावार।
संघ शिरोमणि गणनायक विभुवर, पा न सकूँ कभी तेरा पार।

करूँ समर्पण श्रद्धा अर्पण, परम पुरुष तुम करो उपकार।
अभिस्नात हो तेरे जल में, भव तीर तरूं हे तारणहार।

दृढ़ निश्चयी, निर्भीक, निर्लोभी, अप्रमत्त, अकषायी अहो।
तुम पथ दर्शक, तुम त्राण मेरे, तुझसा जग में है कौन कहो?

आगमवेता तुम प्रखर स्वाध्यायी, सरल, सहिष्णु तुम साहित्यकार।
निर्लिप्त हो जल कमल के जैसे, हे निर्मोही तुम निरंकार।

तुझ कृपा पात्र बन रहूं अहो निशि, हे कृपानिधि तुम जगत आधार।
हे महातपस्वी, करुणानिधान, तुम दो सम्यक् दृष्टि बन अमृतधार।

स्वर्ण जयंती संयम पर्याय की, गुण गान करूं तुम करो स्वीकार।
सर्वस्व समर्पित करती गुरुवर, भावभरा लो यह उपहार।

चाँद छाजेड़, अहमदाबाद
रा. का. सदस्य - अभातेममं

युग-युग जियो संघ शिरोमणि, स्वर्णिम पल है आया,
अमृतपुरुष का दीक्षा महोत्सव, जन-जन मन हर्षाया।

सरदारशहर की पुण्य धरा, जन्मा देखो दिव्य सितारा,
जिसकी आज्ञा से आलोकित, है तेरापंथ का ध्रुवतारा।

नेमादेवी-झूमरमल जी, दुगड़ कुल की देखो पुण्याई,
'विनम्रता-अनुशासन' अद्भुत, गणनायक बने वरदायी।।

'सुमेरमल जी' से दीक्षित मोहन, 'तुलसी' से विकसित,
'महाप्रज्ञ' अभिसिंचन से देखो महाश्रमण बने सुरक्षित।

तीन देश, तेईस राज्य तव पदचिन्हों से हुए आलोकित,
अहिंसा यात्रा का नव इतिहास विश्व में हुआ आलेखित।

संयमपर्याय के पाँच दशक, करती हूँ श्रद्धासिक्त वंदन,
सुदीर्घ बने संयम साधना, अर्पित करती भावों का चंदन।

मीना ओसवाल, बालोतरा
रा. का. सदस्य - अभातेममं

शाखा मण्डलों द्वारा प्राप्त चयनित काव्य रचनायें

गुरु महाश्रमण को नमन हमारा।
दीक्षा दिन की स्वर्ण जयन्ती, पुलकित है, मन मयूर हमारा।।

माँ नेमा का लाल लाडला झुमर कुल का उजियारा।
जिनकी कुशल शासना में, हर्षित है जग सारा।।

इनकी कार्य कुशलता से चमका ये जीवन सारा।
युगों-युगों तक राज करो तुम, नम में हैं ज्यों ध्रुव तारा।।

तुलसी महाप्रज्ञ से ऊर्जा पाई चमका भाग्य सितारा।
ऐसे गुरु को पाकर धन्य हुये, बरसे अमृत धारा ।।

भावों का मंगल तिलक करें हम श्रद्धा थाल सजायें।
पुण्य क्षणों का अभिनन्दन कर, गण का गौरव गायें।।

- मुल्तानी देवी नाहटा
कालू (बीकानेर)

पग-पग चलने वाले सूरज की, क्या गाथा गाएं हम।
आया प्रभु का स्वर्णिम दीक्षा महोत्सव, सब मिल बधाएं हम।।

तुम युग चिंतक, युग प्रहरी, तुम हो युग प्रधान।
तेरापंथ के गण माली, तुमसे है गण की शान।।

पाकर वरद हस्त तुम्हारा, संघ हो गया निहाल।
ज्योतिचरण की छत्र छाया में, गढ़े हैं कई नए कीर्तिमान।।

हे महामनस्वी!, महातपस्वी!, तेरी श्रमशीलता के आगे शीश झुकाएं हम।
नारी शक्ति, तुमसे उर्जित, उड़ रही खुले गगन।।

आर्यवर की पावन निश्रा में, कर रही अपना उन्नयन।
मन मोहक मुस्कान तुम्हारी, हर लेती दिल की तड़पन।।

नयनों की शीतल आभा से, ज्योतित हो जाता जीवन।
कोड़ दिवाली राज करो तुम, मंगल भावना भाएं हम।।

-विमला कोठारी,
घाटकोपर (मुम्बई)

श्रावक जीवन ऊंचा जीवन, हुई सफलता जोर।
महाश्रमण शासन अनुशासन, सबल संगठन डोर।।

तुम महातपस्वी साधक, पापों का तप मिटाये।
जय जय श्री जैन दिवाकर, तेरापंथ नाथ कहाये।।

तुम शांत शिरोमणि सुंदर, समता सिंधु करुणामय।
अपने में रहते बहते, कहते सच बनकर निर्भय।।

नेतृत्व तुम्हारा सुन्दर, तुमने नव फूल खिलाये।
वह सौरभ तुम्हे मुबारक, श्रद्धा से शीश झुकाये।।

तुम आगम विज्ञ विशारद, हमको पहचान सिखाये।
ज्योतिर्मय महासितारे, जन-जन को राह दिखाये।।

शीतल बैद

हे सिद्ध पुरुष, हे शांति दूत महाश्रमण, पावन तेरा नाम है।
चलता-फिरता महाग्रंथ, जंगम तीर्थ धाम है।।

दीक्षोत्सव का मंगल क्षण, करता विश्व प्रणाम है।
शुभ भावों से अर्चा करती, लाखों के घनश्याम है।।

अहिंसा यात्रा प्रणेता, विश्व शांति के अग्रदूत।
दूगड़ कुल के हो उजियारे, भारत माँ के लाल सपूत।।

पाँव-पाँव चल नेपाल शिखर तक पहुँचाई प्रज्ञा प्रभूत।
फैलाया संदेश विश्व में, महावीर वाणी के दूत।।

तेजस्वी आभा-वलय से जीवन आश्वास फैलाय।
तेरापंथ के मुकुट मणि, जिन शासन के ध्रुव तारे।।

अद्म्य साहस, प्रबल पुण्याई, पराभूत हुआ प्रभजन।
शुभ कामना वंदन करते रहे, स्वस्थ चिरायु नेमानंदन।।

सुशीला सेठिया

चेहरे की अलौकिक मधुर मुस्कान
भर देती जन-जन में प्राण
सौम्य, सरल, शांत सुजान
अनुकंपा के साधक को शत-शत प्रणाम।

नैतिक मूल्यों का दिया पैगाम
नशा मुक्ति का किया अभियान
सद्भावों का किया संगान
जीवन में उतारे भावित अरमान।

चले हम पद चिन्हों पर, रहे गतिमान
सूर्य सम ऊर्जा पाकर, बनाये जीवन ऊर्जावान
जैन जीवन शैली की विश्व पटल पर बने पहचान
अवलोकन कर स्वयं का बनें हम नीतिमान।

कनक पारख,
विशाखापट्टनम, आंध्र प्रदेश

सूरज सा चमके गुरुवर का भाल,
चंदा सी शीतल आपकी मुस्कान है
आँखों में बहता करुणा का निर्झर है,
गजगति चलते महाश्रमण गुरुराज है।

हंसो की टोली में गुरुदेव राजहंस है,
ज्ञान के अथाह सागर आगमों का मंथन है।
सरल भाव भाषा में करते फरमावणी,
श्रमण सभी होते गुरुदेव महाश्रमण है।

दूगड़ कुल के लाल संघ सरताज हैं,
समूचे विश्व को गुरुवर पर नाज है।
वर्धापन की शुभ घड़ी आई आज है,
महावीर से देखो हमारे गणी राज है।

सरोज दूगड़ 'सविता',
खारुपेटिया, असम

चरण रज शिरोधार्य करूं, अंतरमन से वंदन अभिनंदन।
महातपस्वी, महामनस्वी, झूमर नेमानंदन।

मुनि सुमेर मल से दीक्षित, आचार्य द्वय ने किया शिक्षित।
गुरु की मेहर और छत्रछाया से, चहुं दिशा हुई सुवासित।

अक्षर-अक्षर ज्ञान दीप जलाया, शब्द-शब्द में अमृत की धार।
संघ शिरोमणि की ऋतुजा से, अभिभूत है सारा धर्म परिवार।

हाथ उठे आशीष मिले, हम सबका सौभाग्य खिले।
मर्यादा और अनुशासन, भैक्षव शासन में खूब फले।

अहिंसा यात्रा में अविराम, चरण रहे निर्विघ्न गतिमान।
शनिवार सामायिक उपहार, युगों-युगों याद रहेंगे तव उपकार।

दीक्षा कल्याण महोत्सव पर, आओ सब मिल संकल्प करें।
संयम और अनुशासन से, धर्म संघ में प्राण भरें।

पूनम तलेसरा,
नाथद्वारा

ओ नभ धरती के अखिलेश्वर.....

कलाकार के कुशल करों ने, जिस प्रतिमा को उत्केरा
पुण्यक्षणों में करने अर्चना, उत्कंठित है मन मेरा

ओ महातपस्वी महाश्रमण ! तुम महा मेघ बन बरस रहे
तुम सींच रहे उन पौधों को, जो अब तक जल बिन तरस रहे।

ओजस्वी यात्रा ने पूरी धरणी पर है बिगुल बजाया,
त्रिआयामी उद्देश्यों से, जन हित को नवपथ दिखलाया।

अनोखी प्रवचन शैली, हृदय पटल पर देती दस्तक,
जीने की परिभाषा पाकर, झुक जाता चरणों में मस्तक।

शनिवार की सामायिक से, स्व से मिलना सिखलाया,
घर-घर बहे संयम की धारा, अलबेला अभियान चलाया।

ओ नभ धरती के अखिलेश्वर ! तव चरणों में सर्व समर्पण,
दीक्षा कल्याण महोत्सव पर, विभुता का लहराये परचम।

रेखा कच्छारा,
डोंबिवली (मुम्बई)

भैक्षव शासन के मुकुट मणि से महक रहा गण उपवन सारा।
दीक्षा कल्याण वर्ष शुभ अवसर युग पुरुष को नमन हमारा।।

मुनि सुमेर से दीक्षित सरदारशहर की पुण्यधरा।
गिरीगढ़ में गुरु दर्शन का प्रथम अवसर मिला सुनहरा।।

गुरु द्वय की पारखी नजरों ने शुभ भविष्य का सीन निहारा।
मुनि मुदित से महाश्रमण बन चमक रहे ज्यों ध्रुवतारा।।

संघ निष्ठा, सेवा समर्पण करुणा की बहती उज्जवल धारा।
मीठी मंद-मंद मुस्कान आपकी देते दोनों हाथों से जिकारा ।।

मंत्री मुनि शासनमाता पद संबोधन का अद्‌भुत नव्य नजारा।
मुख्य मुनि साध्वीवर्या पद सृजन से चमकागण का भाग्य सितारा।।

पचास हजार किमी पदयात्रा से जन मानस में फैलाया उजियारा।
दीक्षा कल्याण वर्ष शुभ अवसर युगपुरुष को नमन हमारा ।।

सरोज देवी सेठिया,
कालू

सरदारशहर के तुम उज्जवलतम नक्षत्र।
फैल रही आभा तुम्हारी भीतर बाहर सर्वत्र।।

फूलों सी मुस्कान मनोहर, मुख मंडल पर सोहे।
महिला-पुरुष, बाल और वृद्ध हर मन को मोहे ।।

पढ़ कर साहित्य आपका सबको राह मिली।
पाकर सिंचन स्नेह भरा, निष्ठाएं खूब फली ।।

तुलसी से पाया प्रखर ज्ञान, महाप्रज्ञ से गहन ध्यान था।
इंगित सदा शीश धरा, गुरु दोनों को तुम पर अभिमान था।।

तुमने आगम व तत्व दर्शन का ज्ञान कराया।
अणुव्रत-धर्म चर्चाओं से सोए मानस को जगाया।।

दीक्षा की स्वर्ण जयंती पर दशों दिशाएं मुस्कुराई।
कोटि-कोटि वंदन- अभिनंदन, कोटिशः तुम्हें बधाई।।

कमला बैद,
नोएडा

हे युगदृष्टा, हे युगसृष्टा, तुम ही हो जन जन के राम ।
युगप्रधान के पावन चरणों में, करती श्रद्धा से प्रणाम ।।

पावन धरा सरदारशहर की, दुगड़ कुल के हो तुम ताज ।
अर्द्ध सदी संयम जीवन की माँ नेमा भी करती होगी नाज ।।

तुलसी शासन मातृ भूमि पर, मुनि सुमेर से पाई दीक्षा।
मोहन से बन गए मुदित तुम, गुरु तुलसी से पाई शिक्षा ।।

महाप्रज्ञ के हो तुम पट्टधर भैक्षव गण के हो सरताज ।
दीक्षा कल्याण महोत्सव पर, सौ सौ बार बधाएं आज ।।

सूरज से है तेज तुम्हारा, चन्दा जैसी है शीतलता ।
सागर सम तुम हो गहरे, गंगा जैसी है निर्मलता ।।

साध्य तू ही आराध्य तू ही, तुम ही हो मेरे भगवान ।
दो आशीर्वर मुझको विभुवर, पाऊँ मैं भी पथ निर्वाण ।।

पूनम दुगड़,
इरोड

जैसे आंधी जली काठ क्या, रवि सा प्रकाश कर सकती है।
वैसे मेरी अल्पमती क्या, गुरु-गुण वर्णन कर सकती है।।

अद्भुत आभामंडल गुरु का, मुखर मौन हो जाते है।
प्रश्न कहे बिन उत्तर मिलता, अचरज से भर जाते हैं।।

प्रभुवर मोक्ष स्वरूप यदि तो, गुरुवर साक्षात मोक्ष पथ है।
चलते-फिरते प्रभु सम लगते, गुरुवर मुक्ति का रथ है।।

जैसे गहन रात्रि के तम को, रवि की एक हिरण हरती।
अमृतमय वाणी की बूंदों से, तन की सारी सुधा मिटती।।

पंच तीर्थ दर्शन गुरु में है, और न कुछ तीर्थ चाहूं।
गुरु कृपा ही मांगू मैं अब, और न कोई पदार्थ चाहूं।।

चित शांति के लिए आपने, जैनागम रस चखा दिया।
कर्म रहस्य बता कर, मुझको जीवन जीना सिखा दिया ।

आशा जैन,
बेहाला

सब कुछ अर्पित स्वयं समर्पित, संघ शिखर लो तुम्हे प्रणाम ।

अनुकंपा से अनुप्राणित तुम, करते जन-जन का उपकार।
श्रम का पावन परिमल महके, उपशम भाव स्वयं साकार।।

हिमगिरी सा चारित्र समुन्नत, मानसरोवर सा मोहक मन।
गंगा सम निर्मल विचार है, दिव्य भव्य भावों का उपवन।।

कायगुप्ति का कौशल अनुपम, वचनगुप्ति बनी पहचान।
मनोगुप्ति है स्वयं शिवालय, वीतराग सा रूप सुजान।।

सकल विश्व के त्राण तुम्ही हो, इन प्राणों के प्राण तुम्ही हो।
मानव जग की शान तुम्ही हो, अंतर्मन भगवान तुम्ही हो।।

भिक्षु, जीत, तुलसी गणिवर की, मुखर कर रहे वाणी हो।
दिव्य दिवाकर हे ज्योतिर्धर, आत्म लक्ष्य कल्याणी हो।।

मंजू बैद,
लाडनूं

मुख मंडल की मोहक मुस्कान, सबको देती है खुशियां अपार।
अमृत बरसता नयनों से जिनके, दर्शन से मिलता जीवन का सार।।

छोटी उम्र में दीक्षा ली थी संघ में, कौन जानता होंगे संघ प्रणेता।
विलक्षण ज्ञान, अद्भुत गुरुभक्ति से, मिले संघ को नए अध्येता।।

गुरु तुलसी, महाप्रज्ञ ने संवारा जिनको, मिला संघ को तपस्वी महान।
मुनि मुदित को बनाया महाश्रमण, समूचे संघ की सौंपी सार संभाल।।

प्रेम, करुणा, वात्सल्य का भाव भरा है, गुरुवर आपके तन मन में।
गुरु भक्ति की लौ जगे हृदय में, खुशियों का प्रकाश मिले जीवन में।।

मिले प्रकाश ज्ञान का गुरुवर से, मिटता अज्ञान का अंधियारा।
ज्ञान से मिलता पथ प्रगति का, पूजता ज्ञान को जग सारा।।

दीक्षा के स्वर्ण जयंती वर्ष पर, बहुत-बहुत करते गुरुवर वंदन।
संघ और संघ पुरुष चिरायु रहे हमेशा, हम करते हैं अभिनंदन।।

उषा सेठिया,
विजयनगर, बंगलूरू

स्वर्णिम दीक्षा कल्याण महोत्सव, कण-कण में स्वर्णिम बहार।
ओ गणराजा! तुम्हे प्रणत है, आस्था की वीणा के तार।।

सूरज, चाँद सितारे अवनी अंबर दसों दिशाएं।
किरणों से अभिषेक करें सब मिलकर तुम्हें बधाए।
कुदरत का हर पोर पुलक पहनाए, मुक्ताहार।।
ओ गणराजा! तुम्हें...

शब्दों से क्या करूं अर्चना, तुम तो शब्दातीत बन गए।
सीमा में क्या बांधू भगवान! तुम तो सीमातीत बन गए।
महासूर्य का तेज निरख सब बन गए चित्राकार।।
ओ गणराजा! तुम्हें...

हे गण सागर! सौम्य सुधाकर ! करुणाकर! शुभंकर!
आगमधर! कीर्तिधर! श्रुतधर! अंतरद्रष्टा ! विभुवर !
हर धड़कन में नाम तेरा तूं श्वांसों का आधार।
रहो निरामय ज्योतिवलय! तुम दीपो साल हजार।।
ओ गणराजा! तुम्हें...

सरला भूतोड़िया,
हैदराबाद

कैसे बांधे शब्दों में तुम्हें, महामानव तुम हो शब्दातीत।
स्वयं जीवन तुम्हारा, बन गया एक आगम अपरिमित।।
सदा अनुत्तर ज्ञान दर्शन चारित्र के अनुपम धारी।
सत्य अहिंसा तप भावना तुम्हारी रहती अति भारी।।
कैसे बांधे शब्दों.....

नित रहते शक्ति भक्ति वीरत्व करुणा से अनुप्राणित।
हो रहे धवल पुण्डरिको में महापुण्डरीक से शोभित।।
अनुपम लेखनी में तुम्हारी पाते सत्यम शिवं सुंदरम।
अमृत सी वाणी से झरता सदा पावन मधु मधुरतम।।
कैसे बांधे शब्दों.....

तुम विनय की परिभाषा, रचा संयम का एक इतिहास।
धन्य हुआ धर्मसंघ हमारा पाकर तुमसे अटल विश्वास।।
निकल पड़े अहिंसा यात्रा पर मिटाने जग की पीर।
जय जय हो पावन चरण जय जय महाश्रमण वीर।।
कैसे बांधे शब्द.....

विजयलक्ष्मी मुंशी,
उदयपुर (राज.)

धरती पर महावीर की तुम मूरत हो गुरुराज।
जैनों के स्वाभिमान की तुम सूरत हो गुरुराज।।

अहिंसा, सत्य, ज्ञान का सिर पर है तेरे ताज।
आध्यात्म के उच्च शिखर पर चढ़ गये तुम आज।।

जिनवाणी को घर-घर पहुँचाने, चलते हो अविराम।
हर मन को तुम करते, तेरापंथ के राम।।

पचास हजार की पदयात्रा से, नव कीर्तिमान बनाया।
माँ नेमा के लाल तूने तो अद्भुत दृश्य दिखाया।।

वात्सल्य, करुणा का श्रोत बहाते नैनों के निर्मल प्यालों से।
तेरापंथ तो धन्य हो गया, गुरु महाश्रमण को पाने से।।

दीक्षा स्वर्ण जयंती मनाते, हृदय से तुम्हें बधाते हैं।
जनम-जनम आशीर्वाद पाऊं, यही भावना भाते है।।

शांति बरड़िया,
कुन्नूर, तमिलनाडु

निर्झर... निर्मल... निरंतर... नित्य... प्रवाहित।

आपकी करुणा का सहारा चाहिए।।

अविचल... अडिग ... अटल... अचल... प्रवाहित।
आपकी दया दृष्टि का आसरा चाहिए।।

तिमिर... धुंध... गाढ़ा... अंधकार... प्रवाहित।
आपकी ओजस्विता का आश्रय चाहिए।।

दीप्त... उर्जस्व... तेजस्वी... ऊर्जावान... प्रवाहित।
आपकी प्रेरणा स्रोत का आलंबन चाहिए।।

निर्भीक... निडर ... निर्भय... अभय... प्रवाहित।
आपकी स्वर शैली का भरोसा चाहिए।।

हे गुरुवर... करुणानिधि... कृपालु... करुणा सागर।
आतप से जीवन में,
प्रवाहित... तटस्थ वटवृक्ष की छाया चाहिए।
प्रवाहित... करुणा स्त्रोत का सहारा चाहिए।।

निकुंज जैन,
पटना

जिन शासन के प्रखर दिवाकर तेरापंथ के तुम सिरमौर।
अनुकंपा लोकोत्तम तुम्हारी, है तुलसी-महाप्रज्ञ पट्टधर।।

देवकुमार सा रूप सुंदर सबके मानस को भाते हैं।
बन जाते हैं भक्त सभी जन जो भी चरणों में आते हैं।।

तेज बिखरता है आँखों से होठों पर मुस्कान झलकती।
शम-श्रम-सम की युति है जीवन, प्रेरित सबको करती रहती।।

नाथ! तुम्हारे श्रमणत्व की गूंज रही है अमर कहानी।
श्रमण नहीं हो महाश्रमण तुम पल-पल अविचल आत्म कहानी।।

कीर्तियों की गाथा तुम्हारी कर रही नव-नव उन्मेष।
शासनमाता, मुख्य मुनि, साध्वी वर्या, संघ को दिया विशेष।।

युग-युग जियो गणमाली तुम करोड़ दिवाली राज करो।
शक्ति भरो, भक्ति भरो जन मानस में, मानवता की पीर हरो।।

स्मिता जैन,
कांटाबांजी, ओडिशा

'महासूर्य के आंचल आया, दिव्य ज्योति ले नया सवेरा।
रोम-रोम में प्रसरित जिसके, अनुपम किरणों का है घेरा।।

गण के प्राणों में मोहक छवि, प्रथम दिवस से हो गई अंकित।
गुरु की हर दृष्टि पर तुमने, किया सर्वस्व अपना अर्पित।।

हर अपूर्ण गुरुओं का सपना, हर स्थिति में साकार किया है।
गुरु के अरमानों को मानो, हर पल हर क्षण स्वयं जिया है।।

अध्यात्म के सिरमोर मनीषी, गुणों की आभा अनुपम अनन्त।
धन्य हुई ये वसुधा तुमसे, धन्य हुआ यह तेरापंथ।।

ज्योतिपुंज ने ज्योतिकरों से अन्तहीन आलोक बिखेरा।
सोते-जगते हर रोम में प्रभुवर तुमने किया सवेरा।।

कविता सुराणा

सूरज जैसा तेज चमकता, उन में शशि की है शीतलता।
चरण गगन पर छाप छोड़ते, मुखारविंद, छाई कोमलता।।

महावीर के उपदेशों का, मधुरवाणी से करते गान।
बोध अहिंसा का देकर के, दिया सभी को नैतिक ज्ञान।।

स्याद्वाद और अनेकान्त का, जीवन में करते रस पान।
ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप, ये चतुरंग हैं उनकी आन।।

नलिनी सेठिया,
गुवाहाटी

एक सूरज जो भोर में उगता, ढक जाता है सांझ।
हमें मिला एक ऐसा सूरज, जो चमके दिन-रात।।

आँखों से करुणा रस बरसे, छलके सहज विनम्रता।
गुरुपद की गरिमा है उनमें, अनुपम गुरु की वो गुरुता।।

आकर्षण है उनमें ऐसा शांत सौम्य मुस्कान अजब।
अमृत बरसे है वाणी में, आभामंडल में तेज गजब।।

पाँच-पाँव नित चल चल कर, अंबर-धरती को वो नाप रहे।
शीश जैसा मुख है शीतल, जग में शीतलता ही बाँट रहे।।

आत्म-रमण में निरत-रत, त्यागी है सारी सुविधाएं।
धन्य हुए हम इस युग में भी, ऐसे सरल साधक पाये।।

मोहन से मुदित अणगार बनकर, महाश्रमण-सा पद पाया।
ऐसे महातपस्वी नायक को पाकर, यह तेरापंथ भी सरसाया।।

मनीषा गन्ना,
मैसूर

दुगड़ कुल के नेमानंदन, शत-शत करते हैं हम वंदन।
मोहन से मुदित, महाश्रमण बने, भावों की श्रद्धा लो अर्पण।।

'स्वर्ण-जयंती' दीक्षा महोत्सव पर, महाश्रमण को हम बधाएं।
युग प्रधान लो अभिवंदना, जन-जन के मन प्रमुदित पाए।।

अहिंसा यात्रा कर, देश-विदेश, हर-गांव का किया उध्धार।
वोट, नोट नहीं खोट चाहिए, दे दो हमें यही उपहार।।

नैतिकता, सद्भावना की ले हाथों में दिव्य मशाल।
मर्यादा अनुशासन की छतरी, ले पहुंचे वे सबके द्वार।।

'संघ पुरुष' ने जन्म धरा पर, नव इतिहास रचाया।
नवमी साध्वीप्रमुखा नियुक्ति, साध्वी गण गौरव है पाया।।

युग-युग करो शासन गुरुवर, यही भावना प्रतिपल भाते।
स्वास्थ्य निरामय रहे प्रभुवर, श्रद्धा शीष झुकाते।।

हेमलता परमार
अहमदाबाद

महातपस्वी महाश्रमण की महिमा जग में भारी।
जिनकी पद रज पाने को, दौड़े आते नर-नारी।।

महाव्रत धारी पर उपकारी, निर्मल विमल यशधारी।
पावनतम चारित्र आपका, सद्गुण के हो भंडारी।।

ऋजुता मृदुता सहिष्णुता संयम के सच्चे साधक।
विनम्रता के हो तुम धारक, बन गए धर्माराधक।।

रहते हो प्रभु व्यस्त स्वस्थ, आत्मस्थ प्रमाद न करते।
समयं गोयम मा पमायए, क्षण-क्षण आप सुमरते।।

शांतिदूत श्री महाश्रमण का, चमक रहा मुखमंडल।
बड़ा तेज आभामंडल युत मंगलमय है हर पल।।

अष्ट सिद्धि नव निधि के धारक, तारण गण के नायक।
विघ्न विनाशक ज्ञान प्रकाशक, तुम हो शांति प्रदायक।।

सौम्य मूर्ति विशेष पाकर, नूतन संदेश हर्षित पुलकित है।
सारा भारत देश नेपाल, भूटान विशेष सारे परिचित है।।

विमला संकलेचा,
टापरा

हे श्रमणों के सिरमोर महाश्रमण,
आपके दीक्षा महोत्सव पर श्रद्धाप्रणत हो देते बधाई।
आप ही हैं वह महासूर्य,
जिसने विश्व फलक पर अहिंसा की नवज्योत जगाई।।

हे तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यप्रवर,
आपके दीक्षा स्वर्णजयंती पर हर्षित मन से देते बधाई।
आप ही हैं वह पथदर्शक,
जिसने मानवता को करुणा एवं संयम की राह दिखाई।।

हे नवजागृति के उन्नायक युगप्रधान,
आपके पंचदशक संयमाराधना पर भावों से देते बधाई।
आप ही हैं वह शांतिदूत,
जिसने कठिन विपदा में शांति की धार बहाई।।

आशा खाब्या
अहमदाबाद

गुरु महाश्रमण के अभिनंदन में, दशों दिशाएं पुलक रही है।
ज्योतिचरण की जीवन-सौरभ से, गण की बगिया महक रही है।।

भाव भरा वंदन चरणों में, करती हूँ मैं शत-शत बार।
आस्था के मंगल भावों का अर्पित है मंगल उपहार।।

हे तेरापंथ की शान, हमें अभिमान, तुम्हें पाया हमने।
तुम में तुलसी महाप्रज्ञ युग की देखी है झलक जग ने।।

हे गण गौरव! गणनायक ! नेतृत्व तुम्हारा है वरदान।
उज्जवल यश गौरव गाथा से बन रहे अनोखे कीर्तिमान।

श्रावक समुदाय सदा आभारी, अहिंसा का ऐसा दीप जलाया।
करुण हृदय, मीठी वाणी से, नारी उत्थान का कदम बढ़ाया।।

मुक्ता मणियों से थाल सजाकर, दीक्षा कल्याण महोत्सव मनाते हैं।
आप सदा स्वस्थ रहें, प्रमुदित रहे, बस यही भावना भाते है।।

मुन्नी देवी बेताला,
भुवनेश्वर

मानवता के महान मसीहा महाश्रमण मतिमान।
मितभाषी मुदित मन मोहन मनमोहक मुस्कान।।

स्वर्णिम संयम साधना से सुरभित सम्पूर्ण जीवन।
सिद्धपुरुष सत्यनिष्ठ सिद्धिदायक देते संजीवन।।

तेजस्विता युक्त जीवन को यों सद्भावों से संवारा।
तेरापंथ वृहद् व्योम में रहो चमकते ज्यों ध्रुवतारा।।

दीक्षा कल्याण महोत्सव पर अंतर्मन यह अरमान।
देदीप्यमान दिव्यदृष्टि से जीवन कर दो दीप्तिमान।।

पारदर्शी मेघा के मणिदीप आस्था के अक्षय धाम।
प्रज्ञा के प्रांजल प्रखर प्रकाश पुंज तुमको प्रणाम।।

निश्छल निस्पृह सत्पथ पर बढ़ते हुए ज्योतिचरण।
निर्भय निर्मल निर्विकार तुम जय-जय महाश्रमण।।

कमला छाजेड़
कोलकाता

इस युग के तुम महावीर हो, तुम नहीं तुम विराग हो।
कृष्ण, बुद्ध, गाँधी तुम ही हो, तुम सबके पूजा धाम हो।।

महाप्रज्ञ के सहयोगी तुम, अमृत महोत्सव का उपहार।
अपना हित सबका हित साधो, रचो स्वयं नूतन संसार।।

महाश्रमण का पद गरिमामय, नई शक्ति का अभिसंचार।
क्षमताएं तब सहज उजागर, भरा हुआ भीतर भण्डार।।

अंतरंग परिषद से जुड़ फिर, करते रहे कार्य निष्काम।
दो-दो आचार्यों ने मिलकर किया, तुम्हारा नवनिर्माण।।

गण संचालन कला सिखाई, प्रणत हो रहा सकल जहान।
आहर्द संस्कृति के सूर्य उदय, है तुम पर सात्विक अभिमान।।

नये क्षितिज का उद्घाटन हो, करो अनूठा अनुसंधान।
आँखों में छवि बसे तुम्हारी, अधरों पर मुखरित हो नाम।।

सुमन पारख

दो गुरुवर का सान्निध्य जिनको मिला है,।
नेमाजी के आंगन गुरुवर महाश्रमण पला है।।
सचमुच आज हमारा सौभाग्य खिला है।
महाश्रमणजी का मंगल सान्निध्य तेरापंथ धर्म संघ को मिला है।।

बचपन से ही मोहन तेजस्विता के पर्याय है।
बाल लाडले झूमर कुल के, निष्ठा समर्पण के अध्याय है।।
अहिंसा-यात्रा अणुव्रत पर चलते वो अविराम है।
अमृत वर्षा करे वो गण में 'तेरापंथ के राम' है।।

नई पीढ़ी में संस्कारों का सिंचन करते गुरुवर आज है।
अंतर भावों से ध्यान धरो तो, पूरण करते काज है।।
महाश्रमण वर को मिला, तेरापंथ के वो सरताज है।
महाश्रमण जुग-जुग तपो प्रभु, अंतर की आवाज है।।

सरिता राखेचा

जय जय भैक्षव संघविकासक ! जय जय तेरापंथपते !
जय जैनागमसिन्धोर्मन्थक ! जय गणशेखर! मेध्यमते !

महाश्रमणोस्तु मंगलम्

स्वर कृतज्ञता के :-

* कृतज्ञ है परम श्रद्धेय परम पूज्य आचार्य प्रवर के, जिनके मंगल आशीर्वाद से हम **"महाश्रमणोस्तु मंगलम्"** का आयोजन कर पाये।
* कृतज्ञ है श्रद्धेय साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के, जिनका पावन पाथेय **"महाश्रमणोस्तु मंगलम्"** के आयोजन का आधार बना।
* कृतज्ञ है अभातेममं की आध्यात्मिक पर्यवेक्षक श्रद्धेय शासन गौरव साध्वीश्री कल्पलताजी के, जिनके सक्रिय मार्गदर्शन में हम सबमें ऊर्जा का संचार किया।
* कृतज्ञ है श्रद्धेय मुख्य मुनि प्रवर, साध्वी वर्याजी एवं समस्त चारित्रात्माओं के, जिनकी निरन्तर प्रेरणा से हमारे आयोजन सफल बने।

स्वर आभार के :-

* आभारी है हमारी संरक्षिका, परामर्शिका, ट्रस्टीज, पदाधिकारीगण एवं राष्ट्रीय कार्यसमिति बहिनों के, जिनका सहयोग सदैव हमारे साथ रहा।
* समस्त शाखा मंडलों के भी हम आभारी हैं, जिन्होंने सक्रियता के साथ हर कार्य को क्रियान्वित किया एवं तप-जप में सहभागिता दर्ज करवायी। आपकी यह सक्रियता प्रवर्धमान रहे, यही मंगल कामना है।
* आभारी है इस कार्यक्रम की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. सूरज बरड़िया एवं सह संयोजिका श्रीमती कुमुद कच्छारा के, जिनका श्रम इस महनीय आयोजन में मुखर रहा।
* आभार व्यक्त करते हैं रा.का.स. श्रीमती अलका बैद का जिनके सक्रिय श्रम से **"महाश्रमणोस्तु मंगलम्"** के तप के आंकड़ों का कलात्मक रथ एवं **"समर्पण कृति"** का व्यवस्थित निर्माण हुआ।
* आभार व्यक्त करते हैं रा.का.स. श्रीमती मंजू भूतोड़िया, श्रीमती विनीता बैंगानी एवं श्रीमती निर्मला छाजेड़ का, जिन्होंने शाखा मंडलों से निरंतर सम्पर्क कर तप उपासना के क्रम को सुव्यवस्थित किया।

सरिता डागा	**पुष्पा बैंगानी**	**नीतू ओस्तवाल**
अध्यक्ष	प्रधान न्यासी	महामंत्री

पूज्य प्रवर के चरणों में
महाश्रमणोस्तु मंगलम् का आयोजन (जालना)

आचार्य श्री महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

पंजीकृत कार्यालय

रोहिणी भवन, जैन विश्वभारती

लाडनूं - 341 306. जिला : नागौर (राज.)

www.abtmm.org | Mobile App : abtmm | facebook.com/abtmmjain/ | Instagram@abtmmterapanth

लिखें शक्ति की नई ऋचाएं, अनुशासन के दीप जलाएं